जीवनदायिनी माँ नर्मदा

घाट सर्वेक्षण रिपोर्ट

2024

अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान

(मध्यप्रदेश शासन, लोक सेवा प्रबंधन विभाग की पंजीकृत संस्था)

An ISO 9001: 2015 Organisation

आभार संदेश

मान. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी द्वारा माँ नर्मदा के घाटों के संरक्षण और संवर्धन के महत्वपूर्ण प्रयास के लिए अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान (AIGGPA) को निर्देशित किया, जो इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा। यह अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए, सर्व प्रथम मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है। जीवनदायिनी माँ नर्मदा के घाटों का समग्र मानचित्रण करने का विचार उनके दूरदर्शी नेतृत्व का परिणाम है।

इस अध्ययन की संकल्पना और रूपरेखा विकसित करने में नर्मदा समग्र का सहयोग अतुलनीय रहा। उनके मार्गदर्शन और सहयोग से अध्ययन के उद्देश्य को दिशा मिली, जिससे यह कार्य सुचारू रूप से संचालित हो सका। साथ ही साथ नर्मदा समग्र द्वारा धार जिले में डाटा के संग्रहण हेतु भी विशेष सहयोग प्रदान किया गया ।

अध्ययन के संचालन में 16 जिलों (अनुपपुर, डिंडोरी, मंडला, सिवनी, जबलपुर, नरसिंहपुर, रायसेन, नर्मदापुरम, हरदा, सीहोर, देवास, खंडवा, खरगोन, धार, बड़वानी, एवं अलीराजपुर) के कलेक्टर महोदय का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिन्होंने जिलों में कार्यरत सीएम फेलोज को सर्वेक्षण कार्य पूर्ण करने हेतु हर संभव सहायता प्रदान की। उनके समर्थन के बिना यह सर्वेक्षण कार्य संभव नहीं हो पाता।

साथ ही, लोक निर्माण विभाग, मध्यप्रदेश शासन का भी विशेष आभार व्यक्त किया जाता है, जिन्होंने इस अध्ययन को सफल बनाने हेतु पूर्ण समर्थन प्रदान किया ।

अंत में, इस परियोजना से जुड़े सभी व्यक्तियों और संस्थाओं के प्रति हार्दिक धन्यवाद, जिनके सहयोग से यह अध्ययन सफलतापूर्वक संपन्न हो पाया और नर्मदा घाटों के संरक्षण व संवर्धन की दिशा में एक सशक्त कदम उठाया जा सका।

लोकेश शर्मा
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
एआईजीजीपीए, भोपाल

विषयसूची

कार्यकारी सारांश: *7*
परिचय: *14*
उद्देश्य: *21*
कार्यप्रणाली: *24*
अध्ययन की सीमाएं: *26*
डाटा विश्लेषण: *27*
  सामान्य जानकारी: 27
  बुनियादी ढाँचा और सुविधाएँ: 30
  नागरिक/ पर्यटक / तिर्थार्थियों हेतु सुविधाएँ: 34
  स्वच्छता संबंधी बिंदु: 43
  पर्यावरण संबंधी बिंदु: 44
  धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व: 49
प्रमुख सुझाव: *53*
संलग्नक: जिले वार अवलोकन हेतु प्रमुख विषय *61*

कार्यकारी सारांश:

यह अध्ययन माँ नर्मदा के 861 घाटों का व्यापक सर्वेक्षण और मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। माँ नर्मदा, जिसे मध्यप्रदेश की जीवनरेखा माना जाता है, धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व रखती है। इस रिपोर्ट का उद्देश्य इन घाटों की भौगोलिक स्थिति, संरचनात्मक स्थिति, पर्यावरणीय चुनौतियों और धार्मिक-सांस्कृतिक धरोहरों का दस्तावेजीकरण करना है।

अध्ययन में घाटों के विकास, स्वच्छता, जल प्रबंधन, और सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। इसमें मंदिर, आश्रम, और वृक्षों जैसे धरोहरों का महत्व बताया गया है और इनसे जुड़े सांस्कृतिक समारोहों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। साथ ही, धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने और घाटों को संरक्षित करने हेतु ठोस सुझाव और अनुशंसाएँ प्रस्तुत की गई हैं।

इस अध्ययन का लक्ष्य माँ नर्मदा के घाटों को एक सुरक्षित, स्वच्छ और संरक्षित सांस्कृतिक स्थल में परिवर्तित करना है, जो न केवल पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के अनुभव को समृद्ध करेगा बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बनाएगा।

सकारात्मक पहलू:

1. धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व: नर्मदा नदी के घाटों का महत्व न केवल धार्मिक है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा भी है। घाटों पर मंदिर, आश्रम, और ऐतिहासिक धरोहरें स्थित हैं, जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। प्रत्येक वर्ष लाखों लोग इन घाटों पर धार्मिक अनुष्ठान, स्नान और पूजा करने आते हैं।
2. पर्यटन और आर्थिक विकास: नर्मदा घाटों पर तीर्थयात्रियों और पर्यटकों का आगमन दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। धार्मिक पर्यटन के कारण स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी वृद्धि हो रही है। महाकाल लोक और साबरमती रिवर फ्रंट जैसे उदाहरणों से प्रेरणा लेकर, इन घाटों को पर्यटन

स्थलों के रूप में विकसित किया जा सकता है, जिससे स्थानीय व्यवसाय और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

3. सामुदायिक भागीदारी: घाटों के रखरखाव में स्थानीय प्रशासन, समितियाँ और श्रमदान मंडलियाँ सक्रिय रूप से शामिल हैं, जो घाटों की सफाई और जागरूकता अभियानों में योगदान देती हैं। यह सामुदायिक भागीदारी घाटों की स्वच्छता और सुरक्षित उपयोग के लिए महत्वपूर्ण है।

चिंतनीय विषय:

1. बुनियादी सुविधाओं की कमी: घाटों पर शौचालय, पानी की व्यवस्था, और बैठने की जगह की कमी एक गंभीर समस्या है। केवल 19.97% घाटों पर शौचालय की सुविधा है, और 68.64% घाटों पर बैठने की व्यवस्था नहीं है। साथ ही, केवल 11% घाटों पर कपड़े बदलने की सुविधा उपलब्ध है। यह तीर्थयात्रियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती है।
2. प्राकृतिक और पर्यावरणीय समस्याएँ: घाटों के पास कचरा प्रबंधन की कमी है, जिससे न केवल पर्यावरणीय प्रदूषण बढ़ रहा है, बल्कि घाटों की पवित्रता भी प्रभावित हो रही है। लगभग 76% घाटों पर कचरा प्रबंधन प्रणाली नहीं है, और 66% घाटों के पास रासायनिक खेती के कारण जल प्रदूषण का खतरा है।
3. सुरक्षा समस्याएँ: 807 घाटों पर सुरक्षा संकेतक और अवरोधक की व्यवस्था नहीं है, जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की सुरक्षा के लिए खतरनाक हो सकता है। इसके अलावा, रात के समय पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था की कमी है, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ सकता है।
4. धरोहर संरक्षण की कमी: घाटों पर स्थित धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण पर्याप्त रूप से नहीं हो रहा है। केवल 22% घाटों पर नर्मदा आरती का आयोजन होता है। 33% वृहद घाटों पर कोई दिशा संकेतक अथवा सूचना पटल नहीं हैं, जिससे पर्यटकों की धार्मिक जिज्ञासाओं का समाधान नहीं होता एवं उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सुझाव और अनुशंसाएँ :

1. सामान्य सुझाव
   - राज्य शासन को माँ नर्मदा के घाटों के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार हेतु चरणबद्ध रूप से योजना निर्मित करने की आवश्यकता है, प्रत्येक जिले में मॉडल घाट की स्थापना की जा सकती है, इस हेतु वाराणसी के नमो घाट एवं उत्तराखंड के चण्डी घाट से प्रेरणा ली जा सकती है।
   - जिले के प्रभारी मंत्री/जिला कलेक्टर/जिला पंचायत सीइओ/ एवं अन्य अधिकारी जिले के प्रमुख घाटों पर रात्रि विश्राम एवं रात्रि चौपाल का कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं ।
   - धरोहर स्थलों के संरक्षण हेतु एवं इनके महत्व को बताने के लिए सूचना पटों का निर्माण किया जाए। सूचना पटों पर आपातकालीन स्थिति में संपर्क हेतु टिकटतम पुलिस चौकी एवं स्वास्थ्य केंद्र का संपर्क क्रमांक भी अंकित होना चाहिए । घाटों पर सूचना हेतु डिजिटल साईन बोर्ड का उपयोग भी किया जा सकता है, जिसे समय-समय पर अपडेट किया जा सके ।
2. बुनियादी सुविधाओं का विकास एवं समावेशिता:
   - शौचालय: 861 में से केवल 19.97% घाटों पर शौचालय उपलब्ध हैं। इनकी संख्या और गुणवत्ता में सुधार किया जाए, विशेषकर महिलाओं के लिए पृथक शौचालय।
   - कपड़े बदलने की व्यवस्था: केवल 12% घाटों पर यह सुविधा है। तीर्थयात्रियों विशेषकर महिलाओं की सुविधा के लिए इसे प्राथमिकता दी जाए।
   - बैठने और आश्रय स्थलों की व्यवस्था: 68.64% घाटों पर बैठने की व्यवस्था नहीं है। वृहद और मध्यम घाटों पर इसे बढ़ाया जाए। इस कार्य हेतु स्थानीय संगठनों जैसे व्यापारी संगठन, अधिवक्ता संगठन, चिकित्सक संगठन आदि का सहयोग लिया जा सकता है ।

- प्रकाश व्यवस्था: रात के समय सुरक्षा हेतु 770 घाटों पर प्रकाश की कमी दूर की जाए। कम से कम फ्लड लाइट की व्यवस्था हो। प्रकाश हेतु सोलर लाइट के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।
- रैंप का निर्माण: घाटों पर दिव्यांगजनों और बुजुर्गों के लिए सुगम बनाने हेतु रैंप का निर्माण किये जाएं।
- सुरक्षा : 807 घाटों पर सुरक्षा संकेतक नहीं हैं। तीर्थयात्रियों की सुरक्षा हेतु अवरोधक और संकेतक स्थापित किए जाएं। सीढ़ियों और रैंप पर हैंडरेल की व्यवस्था की जा सकती है ।
- मध्य प्रदेश शासन द्वारा फ्लोटिंग अस्पताल की संख्या का विस्तार नर्मदा के समस्त प्रमुख घाटों पर किया जा सकता है इस से घाट पर आने वाले तीर्थयात्रियों/परिक्रमावासियों/ आगंतुकों एवं स्थानीय निवासियों को स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त करने में सुगमता होगी ।

3. वित्तीय प्रबंधन:
    - सांसद आदर्श ग्राम योजना की तर्ज पर विधायक आदर्श घाट योजना का आरंभ किया जा सकता है
    - घाटों पर योग एवं ध्यान केंद्र/पार्क का निर्माण किया जा सकता है इससे घाट पर नियमित धार्मिक आगंतुकों के अलावा वेलनेस और योग टूरिज्म में रुचि रखने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो सकती है।
    - स्थानीय शिल्प और हस्तकला का प्रदर्शन: घाट पर स्थानीय कारीगरों को अपने पारंपरिक शिल्प को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया जा सकता है ।
4. पर्यावरण संरक्षण:
    - कचरा प्रबंधन: 861 में से 781 घाटों पर कचरा प्रबंधन प्रणाली का अभाव है। स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए कचरा प्रबंधन सिस्टम अनिवार्य रूप से लागू किया जाए। वेस्टिंग

वेल, प्रतिमा विसर्जन के लिए घाटों पर पृथक से विसर्जन कुंड की व्यवस्था एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु प्रमुख घाटों पर वेस्ट ट्रैप लगाये जा सकते हैं

- जल प्रदूषण नियंत्रण: घाटों के पास रासायनिक खेती को जैविक कृषि में परिवर्तित करने हेतु जागरूकता अभियान चलाया जाए। माँ नर्मदा के जल को स्वच्छ बनाने हेतु बाईओ रिमेडीएशन प्रक्रिया का उपयोग किया जा सकता है, जिसे साबरमती नदी की स्वच्छता हेतु उपयोग किया जा रहा है
- वनस्पति संरक्षण: घाटों के आस-पास हरियाली और वृक्षारोपण बढ़ाने के प्रयास किये जाने चाहिए, घाटों पर औषधीय पौधों के उद्यान विकसित किये जा सकते हैं ।
- जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु कृषकों निश्चित समय अवधी (न्यूनतम 3 वर्ष) के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा सकता है ।
- प्लास्टिक पर प्रतिबंध: घाटों पर प्लास्टिक और अन्य हानिकारक सामग्री के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।

5. जनभागीदारी:

- घाटों पर पर्यटकों /आगंतुकों की संख्या में वृद्धि हेतु स्थानीय सोशल मीडिया इन्फ्लूऐंसर को साथ लाया जा सकता है
- घाटों पर विशेष रूप से वृहद एवं मध्यम आकार के घाटों पर घाट सेवा मित्र (वालंटियर) को एक वर्ष की सीमित अवधि के लिए नियुक्त किया जा सकता है
- घाटों के प्रति जन जुड़ाव को बढ़ावा देने हेतु घाटों का नाम परिवर्तित किया जा सकता है, वृहद घाट का नाम प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी, पौराणिक एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व के नाम पर रखा जा सकता है ।

स्रोत: सिद्ध घाट, मंडला जिला

त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

परिचय:

नर्मदा नदी मध्य प्रदेश की जीवनरेखा मानी जाती है और इसे नर्मदा घाटी की संस्कृति, इतिहास, और धार्मिक मान्यताओं का मूल स्रोत माना जाता है। नर्मदा नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित अमरकंटक पठार से होता है। माँ नर्मदा की कुल लम्बाई लगभग 1,312 किलोमीटर है जिसमें लगभग 98,796 वर्ग किलोमीटर का जल ग्रहण क्षेत्र आता है । माँ नर्मदा का 87% प्रवाह क्षेत्र मध्यप्रदेश में, 11% प्रवाह क्षेत्र गुजरात में, एवं 2% प्रवाह क्षेत्र महाराष्ट्र राज्य में आता है । माँ नर्मदा के दाहिने किनारे की सहायक नदियों में हिरण, शेर, तवा, चोरल प्रमुख हैं, वहीं बाएं किनारे की प्रमुख नदियों में बंजार, हथनी, शक्कर, डुडंर का नाम आता है । पश्चिम की ओर बहने वाली नर्मदा नदी का पौराणिक, ऐतिहासिक, और धार्मिक महत्व भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। "रेवा" के नाम से प्रसिद्ध यह नदी लाखों लोगों के लिए आस्था का केंद्र है, और इसके किनारों पर स्थित घाटों का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह घाट न केवल पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठानों का स्थल हैं, बल्कि इनकी प्राचीनता और धरोहर वस्तुओं के कारण वे भारतीय सभ्यता के अनमोल धरोहर भी हैं।

नर्मदा घाटों का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व:

'नर्मदा का हर कंकर है शंकर' माँ नर्मदा का एक विशेष धार्मिक और सांकृतिक महत्व है । नर्मदा नदी के किनारे बसे घाट सदियों से धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामुदायिक गतिविधियों के केंद्र रहे हैं। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु इन घाटों पर स्नान, पूजा, और अन्य धार्मिक अनुष्ठान करने आते हैं। मकर संक्रांति, कार्तिक पूर्णिमा, और महाशिवरात्रि जैसे प्रमुख त्योहारों के अवसर पर यहाँ विशाल भीड़ उमड़ती है। इसके अतिरिक्त, नर्मदा परिक्रमा के लिए आने वाले तीर्थयात्री भी इन घाटों पर ठहरते हैं, जिससे इनका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। इन गतिविधियों के कारण घाटों का

सामाजिक-आर्थिक मूल्य भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। नर्मदा भारत के हृदय में धार्मिक परम्पराओं और आध्यात्मिक चेतना का सतत प्रवाह है।[1]

माँ नर्मदा से जुड़ी विशेष धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं में नर्मदा परिक्रमा प्रमुख है । सर्पूण भारत वर्ष में एवं विश्व में एक मात्र नर्मदा ही एक ऐसी नदी है, जिसकी विधिवत रूप से परिक्रमा की जाती है। अध्यात्मिक एवं पौराणिक विधान के अनुसार यह परिक्रमा कार्तिक मास शुक्ल पक्ष के एकादशी (जिसे देवप्रबोधनी एकादशी के नाम से जानी जाती है), से प्रारंभ होकर मध्य कि चातुर्मास व्यतीत विश्राम के पश्चात् पूरे वर्ष निरंतर गतिमान रहती है, यह परिक्रमा उत्तर तट से प्रारंभ होकर के दक्षिण तट होते हुये पुनः जिस स्थान से प्रारंभ की जाती है उसी स्थान पर आकर

नर्मदा परिक्रमा

स्त्रोत: नर्मदासमग्र

समाप्त की जाती है। यह परिक्रमा 03 वर्ष, 03 माह, 13 दिवस की होती है। कुछ असमर्थ वृद्ध लोग वाहन से भी नर्मदा परिक्रमा करते जो 15 दिवस में पूर्ण हो जाती है। परिक्रमा के कई प्रकार हैं: मुंडमाल परिक्रमा (अखंड परिक्रमा), जलहरी परिक्रमा, दंडवत परिक्रमा, मारकंडेय परिक्रमा, वायु परिक्रमा, एवं नर्मदा जल यात्रा । परिक्रमा के दौरान परिक्रमावासियों को माँ नर्मदा के घाटों पर आगमन होता है, जिस वजह से इन घाटों की स्थिति का अवलोकन करना और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है ।

[1] Ravindra, B. (2009). *Narmada Parikrama*. Scribd. Retrieved November 14, 2024, from https://www.scribd.com/document/18161971/Narmada-Parikrama

धरोहर और पर्यावरणीय महत्व:

नर्मदा घाटी सतपुड़ा और विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है, जो वन्य एवं जैव विविधता से परिपूर्ण हैं । नर्मदा के किनारे 960 किमी तक वन्य क्षेत्र फैला हुआ है। इस पारिस्थितिकी क्षेत्र में भारतीय भेड़िया, बंगाल टाइगर, सुस्त भालू, नीलगाय, ढोल और गौर सहित बड़े स्तनपायी प्रजातियों पाई जाती हैं । कुल मिलाकर नर्मदा घटी के जंगल स्तनधारियों की 50 प्रजातियों का घर हैं, जिनमें से 14 लुप्तप्राय हैं, जिनमें भारतीय विशाल गिलहरी, चार सींग वाले मृग, पैंगोलिन और चिंकारा शामिल हैं। यह जंगल पक्षियों की 250 से अधिक प्रजातियों का घर है, जिनमें लेसर फ्लोरिकन, मालाबार पाइड-हॉर्नबिल, ओरिएंटल हनी बज़र्ड और इंडियन पैराडाइज़-फ्लाईकैचर शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इन जंगलों में सरीसृपों की 30 प्रजातियाँ और तितलियों की 50 से अधिक प्रजातियाँ हैं।[2] नर्मदा नदी मध्यप्रदेश में कई राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों से होकर या उनके पास से बहती है। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान होशंगाबाद जिले में स्थित है और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व जिसका हिस्सा है। यह नर्मदा की निकटता से लाभान्वित होता है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान हालांकि सीधे नर्मदा के किनारे नहीं है, लेकिन यह नर्मदा की सहायक नदियों से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित है।

स्त्रोत: सतपुड़ा नेशनल पार्क ऑनलाइन

सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान में प्रवाहित नर्मदा नदी

[2] ERA India. (2021). Narmada Valley dry deciduous forests. In *ERA India*. https://era-india.org/wp-content/uploads/2024/03/Narmada-Valley-Dry-Deciduous-Forests.pdf

घाटों पर स्थित मंदिर, शिलालेख, मूर्तियाँ, और अन्य सांस्कृतिक धरोहरें हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं। इतिहास और प्रागैतिहासिक काल से समृद्ध नर्मदा नदी बेसिन में कई महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल हैं। हथनोरा "नर्मदा मानव" जीवाश्म की खोज के लिए प्रसिद्ध है, जो 1982 में पाया गया एक आंशिक होमो इरेक्टस खोपड़ी है। यह भारत की सबसे महत्वपूर्ण पैलियोएन्थ्रोपोलॉजिकल खोजों में से एक है, जो इस क्षेत्र में प्रारंभिक मानव गतिविधियों की ओर इशारा करता है ।[3] आदमगढ़ हिल्स होशंगाबाद के पास स्थित हैं, यहाँ उत्खनन में हाथ की कुल्हाड़ियाँ, क्लीवर और खुरचनी जैसे औजार मिले हैं, साथ ही प्रारंभिक मानव निवास के साक्ष्य भी मिले हैं।[4]

स्त्रोत: Narmada *Homo erectus* – A possible ancestor of the modern Indian, ELSEVIER

हथनोरा "नर्मदा मानव" जीवाश्म

नवदाटोली महेश्वर के पास स्थित है, इस ताम्रपाषाण स्थल में मिट्टी के बर्तन, आवास संरचनाओं और पत्थर के औजारों के साक्ष्य हैं। यह प्रारंभिक कृषि प्रधान समाजों के जीवन और तकनीकी प्रगति की एक झलक प्रदान करता है । ये पुरातात्विक खोजें भारत में प्रारंभिक मानव विकास और प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के अध्ययन में नर्मदा बेसिन की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती हैं। नर्मदा के तट पर कई धरोहर स्थित हैं जो विशेष धार्मिक महत्व रखती हैं जिन

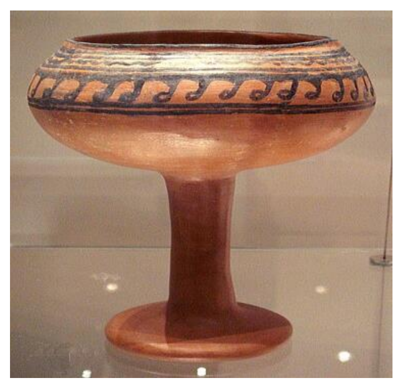

स्त्रोत: Wikipedia

नवदाटोली, ताम्रपाषाण मिट्टी के बर्तन, 1300 BCE

---

[3] Pal, S. (2017, March 18). *Heard of Ramapithecus and Sivapithecus? Here's the Story of India's Earliest Human Inhabitants!* The Better India. https://thebetterindia.com/91960/ramapithecus-sivapithecus-narmada-man-homo-erectus-early-humans-india/

[4] *A Deeper Look at Prominent Acheulian Sites of Central India | Sahapedia*. (n.d.). Sahapedia. https://www.sahapedia.org/deeper-look-prominent-acheulian-sites-of-central-india

में अमरकंटक, ओंकारेश्वर, महेश्वर, आदि शामिल हैं । लेकिन तीव्र मानव गतिविधियों, अनियंत्रित विकास, और प्रदूषण के कारण घाटों और उनके आसपास के क्षेत्रों में संरचनात्मक और पर्यावरणीय क्षरण का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। उद्धरण के लिए “अमरकंटक को "स्मार्ट सिटी" में बदलने के प्रयासों ने अनियंत्रित निर्माण और पर्यटन प्रवाह के बारे में चिंताएँ पैदा की हैं। ये परिवर्तन क्षेत्र के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र और पवित्र स्थलों को खतरे में डालते हैं। अमरकंटक पठार में जहाँ नर्मदा का उद्गम होता है, वनों की कटाई और कम वर्षा के कारण क्षेत्र के जल स्तर में 30% की गिरावट आई है।“[5]

अध्ययन की आवश्यकता:

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नर्मदा नदी के किनारे बसे घाटों का एक व्यवस्थित अध्ययन और दस्तावेजीकरण करना है। इस अध्ययन के तहत घाटों की भौगोलिक स्थिति, भौतिक संरचना, धरोहर वस्तुओं की स्थिति, और पर्यावरणीय स्थिति का संक्षिप्त मूल्यांकन किया गया है । इसके साथ ही, इन घाटों पर तीर्थयात्रियों, पर्यटकों, और स्थानीय निवासियों की गतिविधियों का अवलोकन कर घाटों के उपयोग के पैटर्न को समझने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन द्वारा इन घाटों की वर्तमान स्थिति का एक समग्र मूल्यांकन किया गया है एवं उनके संरक्षण और सुधार के लिए आवश्यक कार्यवाही हेतु अनुशंसा प्रस्तुत की गई हैं ।

माँ नर्मदा के 861 घाटों से अधिक के सर्वेक्षण से यह तथ्य उजागर होता है की इन घाटों पर प्रतिदिन लगभग 2.5 लाख से अधिक पर्यटक/श्रद्धालु/तीर्थयात्रियों का आगमन होता है, जिस में 396 सूक्ष्म आकार के घाटों पर 1 लाख 8 हज़ार से अधिक, 338 मध्यम आकार के घाटों 95 हज़ार, एवं 116 वृहद आकार के घाटों पर लगभग 65 हज़ार से अधिक पर्यटक/श्रद्धालु/तीर्थयात्रियों का आगमन होता है, इस बड़ी जनसंख्या की सुविधा एवं अध्यात्मिक अनुभव को और बेहतर बनाने

[5] Joshi, H. (2019, September 9). *Dammed and Mined, Narmada River Can No Longer Support Her People*. https://science.thewire.in/politics/rights/dammed-mined-narmada-river-ecology/

हेतु, माँ नर्मदा के घाटों के रख-रखाव की आवश्यकता है । माँ नर्मदा के घाटों का संरक्षण और उनकी देखभाल इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। इस अध्ययन से न केवल घाटों की मौजूदा स्थिति का सटीक आकलन प्राप्त होगा, बल्कि यह भी समझ में आएगा कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इस अध्ययन के परिणामों का उपयोग घाटों के विकास और उनकी सुरक्षा के लिए नीतियों को बनाने में किया जा सकेगा। यह अध्ययन घाटों पर आवश्यक सुविधाओं की पहचान कर उनकी स्वच्छता, जल गुणवत्ता, और सुरक्षा को बढ़ाने हेतु सुझाव प्रदान करेगा, जिससे आने वाले समय में नर्मदा के घाटों को एक सुरक्षित, स्वच्छ, और संरक्षित सांस्कृतिक स्थल के रूप में विकसित किया जा सके।

घाटों के विकास का विशेष आर्थिक महत्व है, माँ नर्मदा के घाटों को धार्मिक पर्यटन हेतु विकसित किया जा सकता है, जिस से स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है, उदाहरण के लिए महाकाल लोक के उद्घाटन के बाद से उज्जैन में पर्यटकों की संख्या में बड़ी वृद्धि हुई है। टाइम्स ऑफ़ इंडिया के अनुसार "2023 में मध्य प्रदेश में रिकॉर्ड 11.21 करोड़ पर्यटक आए, सबसे ज्यादा 5.28 करोड़ पर्यटक उज्जैन में आए, इसके बाद इंदौर में 1.01 करोड़ और ओंकारेश्वर में 34.7 लाख पर्यटक आए"[6] । घाट सांस्कृतिक संरक्षण एवं एकता का कार्य करने में भी प्रभावशाली सिद्ध हो सकते हैं, वर्ष 2022 में वाराणसी में विकसित नमो घाट इसका महत्वपूर्ण उद्धरण है, यहाँ देव दीपावली जैसे त्योहारों से लेकर काशी तमिल संगमम[7] जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है ।

[6] Sharma, M. (2024, September 3). Tourism industry to surge on rapid growth trajectory. *The Times of India*. https://timesofindia.indiatimes.com/city/indore/madhya-pradesh-tourism-industry-growth/articleshow/113046124.cms

[7] Economic Times. (2023, December 17). *PM Modi inaugurates Kashi Tamil Sangamam 2.0 at Namo Ghat in Varanasi*. The Economic Times. https://economictimes.indiatimes.com/news/india/pm-modi-inaugurates-kashi-tamil-sangamam-2-0-at-namo-ghat-in-varanasi/articleshow/106066480.cms

साबरमती रिवर फ्रंट, अहमदाबाद

घाटों के जीर्णोधार को एक समेकित रिवर फ्रंट डेवलपमेंट परियोजना का रूप दिया जा सकता है, साबरमती रिवर फ्रंट प्रोजेक्ट अथवा कोटा रिवर फ्रंट प्रोजेक्ट इसके प्रमुख उद्धरण हैं, यदि साबरमती रिवर फ्रंट की बात की जाए तो "आर्थिक रूप से, रिवरफ्रंट विकास ने पर्यटन और स्थानीय व्यवसायों को महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया है। यह सांस्कृतिक कार्यक्रमों, त्यौहारों और रोज़मर्रा की गतिविधियों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य बन गया है, जो स्थानीय निवासियों और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों दोनों को इस क्षेत्र में लाता है। यह साप्ताहिक रविवारी बाज़ार (रविवार का बाज़ार) आयोजित करता है, जो स्थानीय विक्रेताओं से भरा होता है। इस बढ़ी हुई गतिविधि ने आस-पास के इलाकों को पुनर्जीवित किया है, स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है और रिवरफ्रंट के साथ संपत्ति के मूल्यों को बढ़ाया है। विकास ने पूरे अहमदाबाद में शहरी नवीनीकरण के एक लहर प्रभाव को प्रोत्साहित करने में मदद की है, जिससे शहर भर में आगे की योजना पहलों को प्रेरणा मिली है।"[8]

[8] Mishra, K. (2024, October 17). *How Sabarmati Riverfront Development is revitalizing Ahmedabad*. Urban Design Lab. https://urbandesignlab.in/how-sabarmati-riverfront-development-is-revitalizing-ahmedabad/#:~:text=The%20boost%20to%20locals

उद्देश्य:

नर्मदा नदी के घाटों के अध्ययन और दस्तावेजीकरण का मुख्य उद्देश्य इन घाटों की वर्तमान स्थिति का समग्र मूल्यांकन और उनका सतत संरक्षण सुनिश्चित करना है। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

घाटों में सुधार के क्षेत्र की पहचान:

नर्मदा के किनारे बसे घाटों की वर्तमान स्थिति का आकलन कर यह समझना कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इसके तहत घाटों के भौतिक ढांचे, स्वच्छता, सुरक्षा उपायों, पर्यावरणीय प्रभावों, और अन्य सुविधाओं का अध्ययन किया जाएगा।

- घाटों की वर्तमान स्थिति: सुरक्षा अवरोधकों, छायादार स्थानों अथवा बैठने की व्यवस्था की स्थिति का मूल्यांकन।
- सुविधाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता: शौचालय, पीने के पानी, प्रकाश व्यवस्था, और कपड़े बदलने की व्यवस्था, आश्रय स्थल जैसी आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता और उनकी स्थिति।
- स्वच्छता की स्थिति: घाटों के आसपास के स्वच्छता स्तर, कचरा प्रबंधन, नालों के पानी का माँ नर्मदा में अनियंत्रित निकास की स्थिति का मूल्यांकन । वर्ष 2020 में नर्मदा नदी में जल गुणवत्ता का आकलन करने के लिए किये गए एक अध्ययन[9] के अंतर्गत प्राप्त परिणामों में लगभग 12% नमूने उत्कृष्ट, 17% अच्छे, 59% खराब और 12% नमूने बहुत खराब थे, लेकिन मानसून पश्चात 17% नमूने उत्कृष्ट, 12% अच्छे और के 71% खराब थे। जबकि नर्मदा में

[9] Gupta, D., Shukla, R., Barya, M. P., Singh, G., & Mishra, V. K. (2020). Water quality assessment of Narmada River along the different topographical regions of the central India. *Water Science*, *34*(1), 202–212. https://doi.org/10.1080/11104929.2020.1839345

सामान्य जल गुणवत्ता खराब थी, घरेलू सीवेज और कृषि अपवाह जैसे मानवजनित इनपुट ने कुछ मापदंडों को प्रभावित किया ।

घाटों का मानचित्रण

घाटों की सही स्थिति, आकार, और अन्य भौगोलिक विशेषताओं का मानचित्रण कर एक विस्तृत नक्शा तैयार करना, जिससे घाटों की भौगोलिक पहचान और पहुंच का सही आकलन किया जा सके। इस उद्देश्य से प्रत्येक घाट की भौगोलिक स्थिति, नदी के प्रवाह की दिशा में अन्य घाटों से दूरी, और पहुंच मार्ग का विश्लेषण किया जाएगा।

- भौगोलिक स्थिति का दस्तावेजीकरण: घाटों की सटीक स्थिति का जीआईएस (GIS) के माध्यम से दस्तावेजीकरण।
- पहुँच और कनेक्टिविटी का अध्ययन: विभिन्न घाटों तक पहुँचने के मार्गों की स्थिति और उनकी कनेक्टिविटी का विश्लेषण।

संस्कृति एवं धार्मिक धरोहर का दस्तावेजीकरण:

भारत में सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन हिंदू संस्कृति का हर पहलू प्रकृति के साथ गहरा संबंध दर्शाता है। विशेष रूप से, नदियों को इस संदर्भ में सांस्कृतिक संस्थाओं और प्राकृतिक तत्वों दोनों के रूप में पूजनीय माना जाता है। सबसे पवित्र नदियों में से, नर्मदा नदी अपने किनारों पर पाए जाने वाले तीर्थस्थानों की बहुलता एवं नर्मदा नदी की परिक्रमा की विशिष्ट प्रथा के कारण विशेष स्थान रखती है। माँ नर्मदा घाटों पर स्थित मंदिरों, शिलालेखों, मूर्तियों, और अन्य सांस्कृतिक धरोहर का दस्तावेजीकरण करना इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। ये धरोहर वस्तुएँ क्षेत्र की सांस्कृतिक संपदा को सहेजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

- संस्कृति एवं धार्मिक धरोहर की स्थिति का आकलन: इन वस्तुओं का भौतिक और संरचनात्मक मूल्यांकन कर उनके संरक्षण की आवश्यकता का आकलन।
- संस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण: प्रत्येक धरोहर वस्तु का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व समझना ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इनकी देखभाल सही प्रकार से हो।

मानव गतिविधियों का अवलोकन:

तीर्थयात्रियों, पर्यटकों के आने से कई आर्थिक लाभ की सम्भावना सृजित होती हैं, धार्मिक पर्यटन विगत कुछ वर्षों में अर्थव्यवस्था में प्रभावशाली रूप से योगदान दे रहा है, उद्धरण हेतु उज्जैन के महाकाल लोक के निर्माण के बाद धार्मिक पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के कारण उज्जैन के हस्तशिल्प, धार्मिक वस्त्र, प्रसाद, और अन्य सामग्रियों की बिक्री वृद्धि देखी गई है। “यहाँ सिर्फ धार्मिक टूरिस्म से रोजाना 30 करोड़ रूपए का व्यापार होता है ।“ [10]

घाटों पर धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु अध्ययन में घाटों पर तीर्थयात्रियों, पर्यटकों, और स्थानीय निवासियों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों का अवलोकन किया जाएगा।

- तीर्थयात्रियों और आगंतुकों का अध्ययन: आगंतुकों की संख्या का अवलोकन।
- पर्यावरण पर मानव गतिविधियों का प्रभाव: घाटों पर भीड़भाड़, कचरा, और जल प्रदूषण जैसी समस्याओं का अध्ययन कर उनके समाधान के उपाय सुझाना।

हितधारकों को जानकारी उपलब्ध कराना और जन जागरूकता:

[10] दैनिक जागरण. (2023, September 6). महाकाल लोक से बढ़ा उज्जैन के लोगों का व्यापार, आध्यात्मिक अनुभव के साथ कर रहा आर्थिक रूप से संपन्न. *Jagran*. https://www.jagran.com/madhya-pradesh/bhopal-the-business-of-the-people-of-ujjain-increased-due-to-mahakal-lok-they-are-becoming-financially-prosperous-with-spiritual-experience-23523082.html

अध्ययन का उद्देश्य केवल दस्तावेजीकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके निष्कर्षों को प्रशासन, समुदाय के लोगों, और नीति निर्माताओं के साथ साझा करना भी है, ताकि घाटों के संरक्षण और सुधार के लिए ठोस कदम उठाए जा सकें।

- हितधारकों को जानकारी और सुझाव देना: स्थानीय प्रशासन, सांस्कृतिक संगठनों, और अन्य हितधारकों को इन निष्कर्षों के आधार पर आवश्यक सुझाव प्रदान करना।
- सुझाव और अनुशंसाओं का दस्तावेजीकरण: नर्मदा नदी के घाटों के संरक्षण और विकास के लिए भविष्य की योजनाओं और नीतियों के लिए अनुशंसा प्रस्तुत करना।

कार्यप्रणाली:

इस अध्ययन का उद्देश्य नर्मदा नदी के घाटों का समग्र मानचित्रण करना है। इसके अंतर्गत घाटों की वर्तमान स्थिति, सांस्कृतिक और धरोहर महत्व का दस्तावेजीकरण, तथा उनके आस-पास की मानव गतिविधियों का अवलोकन करना शामिल है। इस प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित कार्यप्रणाली अपनाई गई:

प्रारंभिक सर्वेक्षण और प्रश्नावली का विकास:

नर्मदा समग्र एवं अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान द्वारा इस विषय पर पूर्व में उपलब्ध साहित्य एवं अनुभव के आधार पर एक प्रारंभिक सर्वेक्षण प्रश्नावली तैयार की गयी। अध्ययन की समझ और प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिए 16 जिलों में एक पायलट सर्वेक्षण किया गया। इस पायलट से प्राप्त प्रतिक्रियाओं और फ़ीडबैक के आधार पर प्रश्नावली को और अधिक विकसित किया गया ताकि सभी आवश्यक पहलुओं का समावेश हो सके। यह प्रश्नावली गूगल फॉर्म्स के माध्यम से ऑनलाइन उपलब्ध की गई ।

डाटा संग्रहण में सीएम फेलो की भूमिका:

मध्यप्रदेश शासन के 'मुख्यमंत्री यंग प्रोफेशनल फॉर डेवलपमेंट प्रोग्राम' के अंतर्गत कार्यरत सीएम फेलोज/रिसर्च एसोसिएट ने नर्मदा प्रवाह क्षेत्र में आने वाले 16 जिलों में डाटा संग्रहण में सहायता की। इन फेलोज ने जिलाधिकारियों और लोक निर्माण विभाग के सहयोग से डाटा संग्रहण किया, जिससे अधिक सटीक और व्यवस्थित आंकड़े प्राप्त हुए।

सर्वेक्षण क्षेत्र का सीमांकन:

अध्ययन में केवल उन घाटों को शामिल किया गया जो वर्तमान में अस्तित्व में हैं और उपयोग किए जाते हैं। नदी के प्रवाह में परिवर्तन या नर्मदा नदी पर बने बांधों के कारण जो घाट अब सक्रिय नहीं हैं, उन्हें इस अध्ययन से बाहर रखा गया है। इसके अतिरिक्त, अत्यधिक दुर्गम और सुदूरवर्ती घाट भी इस अध्ययन का हिस्सा नहीं हैं।

सेंसस विधि का उपयोग:

अध्ययन में सेंसस विधि अपनाई गई है, जिसमें पूरे क्षेत्र के 952 (जिनकी जानकारी पूर्व में उपलब्ध थी) घाटों का सर्वेक्षण करने का प्रयास किया गया है। इसका उद्देश्य संपूर्ण रूप से घाटों का मानचित्रण करना है । इस पद्धति से समस्त घाटों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है और एक समग्र चित्र प्रस्तुत होता है।

डेटा संग्रहण के साधन:

गूगल फॉर्म्स के माध्यम से संकलित आंकड़ों में प्रत्येक घाट की स्थिति, उसके पास उपलब्ध सुविधाएं, धरोहर वस्तुओं का विवरण, मानव गतिविधियाँ, पर्यावरणीय परिस्थितियाँ, और घाटों पर आने वाले लोगों की संख्या जैसे पहलुओं को शामिल किया गया। क्योंकि गूगल फॉर्म में जियो लोकेशन प्राप्त करना संभव नहीं है, इस समस्या के निर्वरण हेतु गूगल फॉर्म में जियो टैग्ड फोटो अपलोड कराए गए जिन से घाटों की जियो लोकेशन प्राप्त की गई ।

इस कार्यप्रणाली के माध्यम से, नर्मदा नदी के घाटों का एक बेसलाइन अध्ययन किया गया, जो भविष्य में इन घाटों के संरक्षण और विकास में सहायक होगा।

अध्ययन की सीमाएं:

1. डेटा कवरेज: अध्ययन में 16 जिलों और 861 घाटों को शामिल किया गया है (मार्जिन ऑफ़ एरर 1.02%, कॉन्फिडेंस लेवल 95%, पापुलेशन साइज़ 952), लेकिन कुछ सुदूर और दुर्गम घाटों, एवं ऐसे घाट जो डूब प्रभावित हैं अथवा जल मग्न हैं को शामिल करना संभव नहीं हो पाया। इससे घाटों की व्यापकता का पूरा आंकलन सीमित हो सकता है।

2. मौसमी और भीड़भाड़ कारकों का प्रभाव: सर्वेक्षण के समय की अवधि और मौसमी प्रभाव को पूरी तरह से ध्यान में नहीं रखा गया, जो घाटों पर भीड़, धार्मिक कार्यक्रमों, और तीर्थयात्रियों की संख्या में बदलाव ला सकते हैं।

3. मनोवैज्ञानिक और सामाजिक अध्ययन नहीं: अध्ययन में तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के व्यवहार और घाटों के प्रति उनके दृष्टिकोण का मनोवैज्ञानिक आकलन नहीं किया गया है, जो कि पर्यटन विकास और सुविधाओं में सुधार के लिए आवश्यक हो सकता है।

4. सर्वेक्षणकर्ता पर निर्भरता: अध्ययन में डेटा का संग्रहण सर्वेक्षणकर्ताओं (सीएम फेलो) द्वारा किया गया है, जिससे डेटा की गुणवत्ता उनकी व्यक्तिगत समझ एवं अनुभव पर निर्भर हो सकती है। यह संभव है कि एक ही स्थिति को विभिन्न सर्वेक्षणकर्ता अलग-अलग तरीके से देखें और दर्ज करें। इससे डेटा में कुछ स्तर की भिन्नता आ सकती है, जिससे निष्कर्षों पर असर पड़ सकता है।

डाटा विश्लेषण:

सामान्य जानकारी:

माँ नर्मदा के प्रवाह क्षेत्र में आने वाले जिले एवं उनके अंतर्गत घाटों की संख्या:

क्र.	जिलों के नाम	घाटों की संख्या
1.	अनूपपुर	50
2.	डिंडोरी	101
3.	मंडला	126
4.	सिवनी	39
5.	जबलपुर	74
6.	नरसिंहपुर	94
7.	रायसेन	49
8.	नर्मदापुरम	84
9.	सीहोर	55
10.	हरदा	39
11.	देवास	43
12.	खंडवा	44
13.	खरगोन	51
14.	धार	49
15.	बड़वानी	39
16.	अलीराजपुर	15
	कुल	952

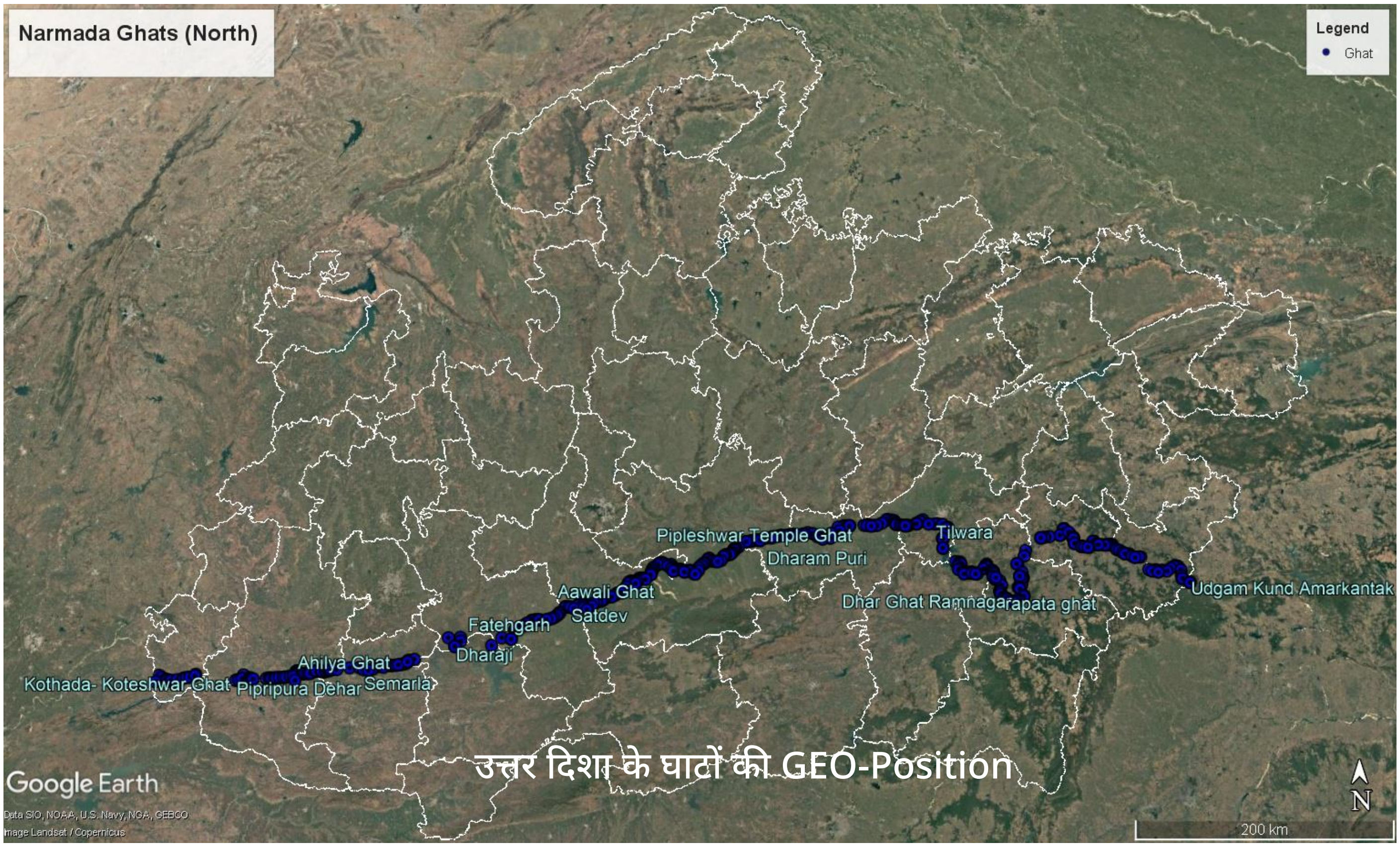

उत्तर दिशा के घाटों की GEO-Position

दक्षिण दिशा के घाटों की GEO-Position

घाटों के आकर का वर्गीकरण:

क्र	जिले का नाम	सूक्ष्म	मध्यम	वृहद	कुल
1.	अनूपपुर	25	22	3	50
2.	अलीराजपुर	14	1	-	15
3.	खंडवा	35	5	2	42
4.	खरगोन	16	16	14	46
5.	जबलपुर	33	35	4	72
6.	डिंडोरी	55	32	7	94
7.	देवास	26	8	3	37
8.	धार	23	23	5	51
9.	नरसिंहपुर	34	31	12	77
10.	नर्मदापुरम	6	53	17	76
11.	बड़वानी	27	8	1	36
12.	मंडला	24	52	22	98
13.	रायसेन	12	12	27	51
14.	सिवनी	19	2	-	21
15.	सीहोर	27	24	5	56
16.	हरदा	23	14	2	39
	कुल	399	338	124	861

- घाटों का वर्गीकरण सूक्ष्म, मध्यम एवं वृहद श्रेणी में किया गया है । वर्गीकरण का आधार निम्लिखित है:
  - सूक्ष्म घाट (Small Ghats): क्षेत्रफल: 0–500 वर्ग मीटर तक। क्षमता: 50–200 लोगों के लिए उपयुक्त।
  - मध्यम घाट (Medium Ghats): क्षेत्रफल: 500–1500 वर्ग मीटर तक। क्षमता: 100–300 लोगों के लिए उपयुक्त।
  - वृहद घाट (Large Ghats): क्षेत्रफल: 1500 वर्ग मीटर से अधिक। क्षमता: 300 से अधिक लोगों के लिए उपयुक्त, विशेष अवसरों पर बड़ी संख्या में भीड़ संभालने में सक्षम।

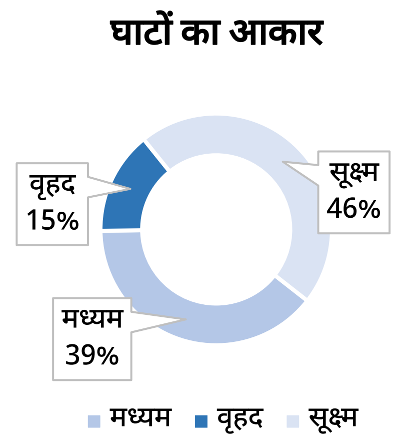

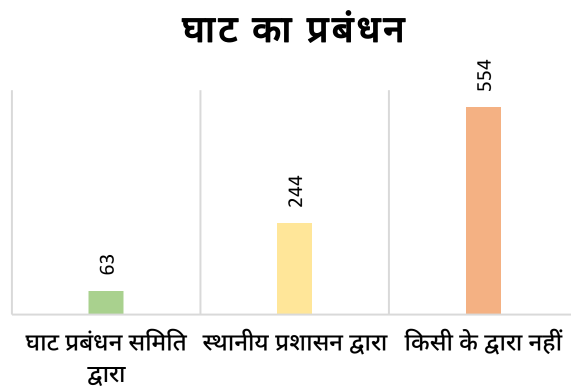

- सर्वेक्षण के अधीन 399 घाट सूक्ष्म, 338 माध्यम एवं 124 घाट वृहद आकार के पाए गए ।
- सर्वेक्षण किये गए घाटों में से 433 घाट माँ नर्मदा के दक्षिण तट पर स्थिति हैं वहीं 428 घाट उत्तर तट पर स्थित हैं ।
- सर्वेक्षण के आधार पर कुल 307 घाटों का रख-रखाव एवं प्रबंधन स्थानीय प्रशासन अथवा घाट प्रबंधन समिति द्वारा किया जा रहा है, अन्य 554 घाट ऐसे हैं जिनका कोई प्रबंधक नहीं है
- कुल 745 घाटों में से 116 घाटों पर श्रमदान मंडली की उपस्थिति दर्ज की गई, मंडली के कार्यों में घाटों की सफाई का कार्य सबसे प्रमुख है, घाट स्वच्छता के साथ ही जागरूकता अभियान एवं पौधा रोपण आदि के कार्यों में मंडलियों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

बुनियादी ढाँचा और सुविधाएँ:

- घाटों का वर्गीकरण उनके निर्माण की स्थिति के आधार पर किया गया है:
  - प्राकृतिक घाट: यह घाट पूरी तरह से प्राकृतिक होते हैं, जहाँ कोई मानव निर्मित संरचना नहीं होती। किनारे पर मिट्टी, रेत और अन्य प्राकृतिक सामग्री दिखाई देती है । उक्त घाट नदी के कटाव और प्राकृतिक प्रक्रियाओं से बने होते हैं। यहाँ कोई संरचनात्मक निर्माण, जैसे सीढ़ियाँ, बाउंड्री या जलप्रवाह नियंत्रक संरचनाएँ नहीं होतीं।

- अर्ध-निर्मित घाट: घाट पर कुछ संरचनाएँ होती हैं, जैसे सीढ़ियाँ हो। इन घाटों में मुख्य रूप से पारंपरिक निर्माण सामग्री (पत्थर, सीमेंट) का उपयोग होता है, लेकिन घाट की प्राकृतिक बनावट भी दिखाई दे । नदी के किनारे का अधिकांश हिस्सा प्राकृतिक होता है, लेकिन कुछ हिस्सों को मानव द्वारा तैयार किया गया होता है।
- निर्माणाधीन घाट: यह घाट निर्माणाधीन अवस्था में होते हैं, जहां कुछ संरचनाएँ बन चुकी होती हैं, लेकिन पूरी तरह से तैयार नहीं होते। निर्माणाधीन घाट में सीढ़ियाँ, रास्ते या बाउंड्री की तैयारी होती है, लेकिन अभी उपयोग के लिए नहीं खोला गया होता। घाट की सुरक्षा, सीवेज और जल निकासी प्रणाली पूरी तरह से स्थापित नहीं होती।
- पूरी तरह से निर्मित घाट: इन घाटों पर पूरी तरह से निर्माण हो चुका होता है। इसमें सीढ़ियाँ, रैलिंग्स, जलप्रवाह नियंत्रण संरचनाएँ, घाट पर बैठने की जगहें और अन्य बुनियादी सुविधाएँ शामिल होती हैं। बिजली, पानी, सार्वजनिक शौचालय जैसी सुविधाएँ पूरी तरह से विकसित होती हैं। इन घाटों का नियमित उपयोग धार्मिक या पर्यटन के उद्देश्य से किया जाता है, और ये सामान्यत: भीड़-भाड़ वाले होते हैं।

प्राकृतिक घाट - चिरी घाट, नारायणगंज, मंडला

अर्ध निर्मित – मर्दाना घाट, बडवाह, खरगोन

निर्माणाधीन – ग्वाडिया घाट, बुधनी, सीहोर

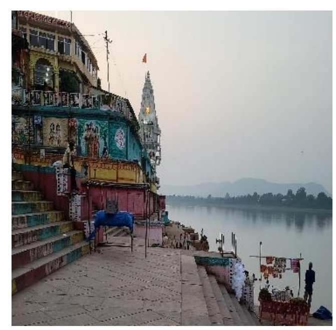

निर्मित – सेठानी घाट, नर्मदापुरम

जिले का नाम	घाट का आकार	अर्ध निर्मित	निर्माणाधीन	निर्मित (पक्का)	प्राकृतिक	कुल
अनूपपुर	मध्यम	4	-	5	13	22
	वृहद	1	-	2	-	3
	सूक्ष्म	2	-	1	22	25
अलीराजपुर	मध्यम	-	-	-	1	1
	सूक्ष्म	-	-	-	14	14
खंडवा	मध्यम	-	-	-	5	5
	वृहद	-	-	2	-	2
	सूक्ष्म	1		7	27	35
खरगोन	मध्यम	5	1	3	7	16
	वृहद	5	1	3	5	14
	सूक्ष्म	5	8	2	1	16
जबलपुर	मध्यम	7	3	9	16	35
	वृहद	-	-	3	1	4
	सूक्ष्म	3	-	2	28	33
डिंडोरी	मध्यम	5	-	7	20	32
	वृहद	-	-	5	2	7
	सूक्ष्म	6	9	6	34	55
देवास	मध्यम	1	-	7	-	8
	वृहद	2	-	1	-	3
	सूक्ष्म	3	-	9	14	26
धार	मध्यम	5	-	8	10	23
	वृहद	-	-	4	1	5
	सूक्ष्म	2	1	1	19	23
नरसिंहपुर	मध्यम	3	1	9	18	31
	वृहद	2	-	2	8	12
	सूक्ष्म	11	-	-	23	34
नर्मदापुरम	मध्यम	7	-	5	41	53
	वृहद	1	-	6	10	17
	सूक्ष्म	6	-	-	-	6
बड़वानी	मध्यम	-	-	1	7	8
	वृहद	-	-	1	-	1

जिले का नाम	घाट का आकार	अर्ध निर्मित	निर्माणाधीन	निर्मित (पक्का)	प्राकृतिक	कुल
	सूक्ष्म	-	-	2	25	27
मंडला	मध्यम	3	2	18	29	52
	वृहद	3		1	18	22
	सूक्ष्म	2	-	5	17	24
रायसेन	मध्यम	-	-	4	8	12
	वृहद	4	-	10	13	27
	सूक्ष्म	2	-	1	9	12
सिवनी	मध्यम	2	-	-	-	2
	सूक्ष्म	1	-	1	17	19
सीहोर	मध्यम	1	1	20	2	24
	वृहद	-	-	3	2	5
	सूक्ष्म	1	3	8	15	27
हरदा	मध्यम	3	-	3	8	14
	वृहद	-	-	2	-	2
	सूक्ष्म	1	2	1	19	23
कुल		110	32	190	529	861

- तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है की वर्तमान आँकड़ों के अनुसार 60 प्रतिशत से अधिक वृहद घाट या तो अर्धनिर्मित, निर्माणाधीन अथवा प्राकृतिक स्थिति में हैं। तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए इन वृहद घाटों के पूर्णतः निर्मित होना आवश्यक है। डिंडोरी, नर्मदापुरम और मंडला जिलों को अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, जहाँ घाटों की संख्या अधिक है, लेकिन पक्के निर्माण की कमी है। इन जिलों में वृहद और मध्यम आकार के घाटों के निर्माण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । जबलपुर जिले में वृहद और मध्यम आकार के घाटों की संख्या और उनकी निर्माण स्थिति अन्य जिलों के मुकाबले बेहतर है ।

घाट के पहुँच मार्ग की स्थिति	वृहद	मध्यम	सूक्ष्म	कुल
दुर्गम / पहाड़ी मार्ग	3	12	51	66
कच्ची सड़क / पगडंडी	27	100	155	282
अर्द्ध पक्का	38	114	84	236
पुर्णतः पक्का	56	112	109	277
कुल	124	338	399	861

- माँ नर्मदा के वृहद घाटों पर पहुँच मार्ग होना अति आवश्यक है, इस सन्दर्भ में अनूपपुर, बड़वानी एवं सीहोर में 1, देवास में 2, डिंडोरी एवं नरसिंहपुर में 3, खरगोन में 4, नर्मदापुरम में 5, रायसेन में 12, एवं मंडला में सर्वाधिक 18 वृहद घाट हैं जिनका का पहुँच मार्ग या तो कच्ची पगडंडी रूप में है, अथवा अर्ध पक्का है । 24% वृहद घाट ऐसे हैं जहाँ तक का पहुँच मार्ग या तो दुर्गम है अथवा कच्ची सड़क के रूप में हैं, इन घाटों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ।

नागरिक/ पर्यटक / तिर्थार्थियों हेतु सुविधाएँ:

शौचालय की स्थिति कैसी है					
जिले का नाम	घाट का आकार	अच्छी	ख़राब	संतोषजनक	कुल
अनूपपुर	मध्यम	1	-	1	2
	वृहद	-	-	1	1
	सूक्ष्म	-	-	1	1
अलीराजपुर	मध्यम	-	1	-	1
	सूक्ष्म	-	4	2	6
खंडवा	मध्यम	-	-	-	0
	वृहद	-	-	-	0
	सूक्ष्म	-	-	-	0
खरगोन	मध्यम	-	2	-	2
	वृहद	3	4	1	8
	सूक्ष्म	3	5	1	9
जबलपुर	मध्यम	1	1	2	4

शौचालय की स्थिति कैसी है					
जिले का नाम	घाट का आकार	अच्छी	ख़राब	संतोषजनक	कुल
	वृहद	2	-	1	3
	सूक्ष्म	-	1	-	1
डिंडोरी	मध्यम	-	1	1	2
	वृहद	-	-	3	3
	सूक्ष्म	3	1	2	6
देवास	मध्यम	2	2	-	4
	वृहद	-	-	3	3
	सूक्ष्म	-	1	2	3
धार	मध्यम	4	4	1	9
	वृहद	1	1	2	4
	सूक्ष्म	-	1	-	1
नरसिंहपुर	मध्यम	2	-	2	4
	वृहद	2	1	-	3
	सूक्ष्म	-	-	-	0
नर्मदापुरम	मध्यम	-	9	7	16
	वृहद	1	4	7	12
	सूक्ष्म	-	-	1	1
बड़वानी	मध्यम	-	-	2	2
	वृहद	-	-	1	1
	सूक्ष्म	-	-	2	2
मंडला	मध्यम	1	4	3	8
	वृहद	-	-	1	1
	सूक्ष्म	-	-	1	1
रायसेन	मध्यम	1	-	-	1
	वृहद	2	3	4	9
	सूक्ष्म	-	-	-	0
सिवनी	मध्यम	1	1	-	2
	सूक्ष्म	-	2	5	7
सीहोर	मध्यम	-	10	9	19
	वृहद	-	2	-	2
	सूक्ष्म	1	3	-	4

शौचालय की स्थिति कैसी है					
जिले का नाम	घाट का आकार	अच्छी	ख़राब	संतोषजनक	कुल
हरदा	मध्यम	-	1	1	2
	वृहद	-	-	1	1
	सूक्ष्म	-	1	-	1
कुल		31	70	71	172

- इस तालिका का विश्लेषण करने पर घाटों पर शौचालय की उपलब्धता की स्थिति का एक स्पष्ट चित्रण प्राप्त होता है। इसमें कुल 861 स्थानों में से केवल 172 स्थानों पर शौचालय उपलब्ध हैं, जबकि 689 स्थानों पर शौचालय की सुविधा नहीं है। इस प्रकार, शौचालयों की कुल उपलब्धता केवल 19.97% है, जो तीर्थयात्रियों और स्थानीय जनता की आवश्यकताओं के हिसाब से काफी कम है। सीहोर, खरगोन एवं नर्मदापुरम जिलों के घाटों पर शौचालय की संख्या अन्य जिलों की तुलना में अधिक है, वहीं खंडवा, अनूपपुर एवं हरदा जिले में घाट शौचालय की संख्या सबसे कम है ।
- कुल 172 घाट जहाँ सार्वजनिक शौचालय की सुविधा उपलब्ध है उनमें से केवल 140 स्थानों पर महिलाओं के लिए अलग से शौचालय उपलब्ध हैं, जबकि 721 स्थानों पर ऐसी सुविधा नहीं है। महिलाओं के लिए पृथक शौचालय की कमी से उनकी सुविधा और सुरक्षा प्रभावित होती है, विशेष रूप से धार्मिक आयोजनों और तीर्थ यात्राओं में जैसे कुंभ मेले में। स्थानीय प्रशासन को इस कमी पर ध्यान देना चाहिए और महिलाओं के लिए पृथक शौचालयों की संख्या बढ़ाने पर जोर देना चाहिए, ताकि उनकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उन्हें सुरक्षित और सुविधा जनक अनुभव प्रदान किया जा सके।
- कुल 861 घाटों में से 638 (76%) घाटों पर नदी जल को पेयजल के मुख्य स्रोत के रूप में उपयोग किया जा रहा है। नल और हैंडपंप की उपलब्धता सीमित है । केवल 70 घाटों पर नल की व्यवस्था है और 113 घाटों पर हैंडपंप उपलब्ध हैं। यह संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है, जिससे तीर्थयात्रियों को सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है।

स्थानीय प्रशासन को प्रधानमंत्री नल जल योजना के अंतर्गत, घाटों पर नल द्वारा पेय जल उपलब्ध करने का प्रयास करना चाहिए, इस से आगंतुकों/तीर्थयात्री/पर्यटकों को सुविधा होगी एवं किसी दुर्घटना की संभावना को कम किया जा सकता है ।

घाट पर उपलब्ध पीने के पानी का स्त्रोत क्या है ?

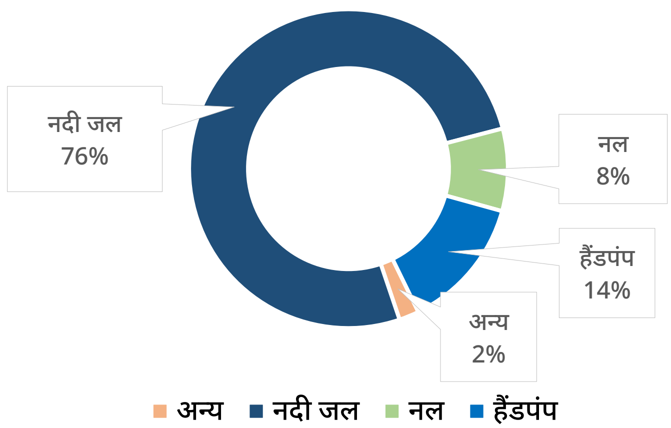

घाट पर प्रकाश (स्ट्रीट लाइट/फ्लड लाइट) की व्यवस्था

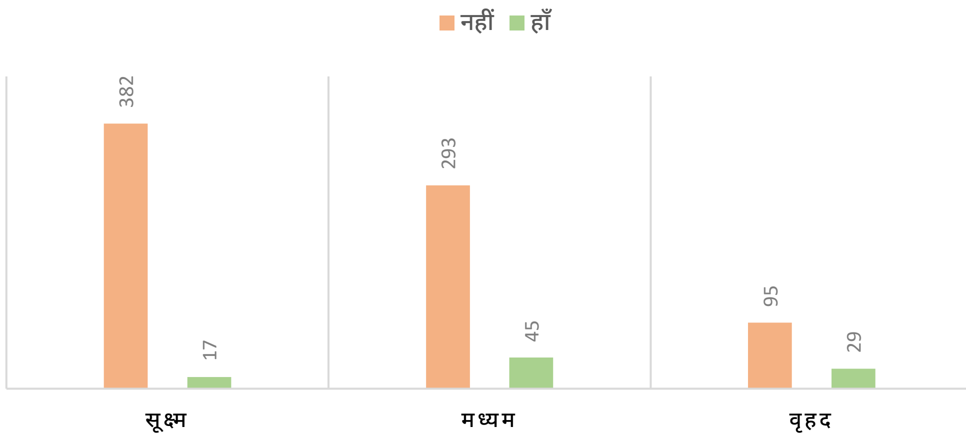

- 861 घाटों में से 770 घाटों पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था का अभाव है, जबकि केवल 91 घाटों पर ही यह व्यवस्था उपलब्ध है। यह स्थिति विशेषकर रात के समय तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए चिंताजनक है, क्योंकि कम रोशनी से दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ सकती है। 124 वृहद आकार के घाटों में से 95 घाटों पर प्रकाश व्यवस्था नहीं है वहीं 338 मध्यम आकार के घाटों में से 293 घाटों पर प्रकाश की कमी है, इन घाटों पर स्थानीय प्रशासन को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है और यहाँ कम से कम एक फ्लड लाइट की व्यवस्था की जानी चाहिए इससे तीर्थयात्रियों के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक अनुभव प्रदान किया जा सकता है।

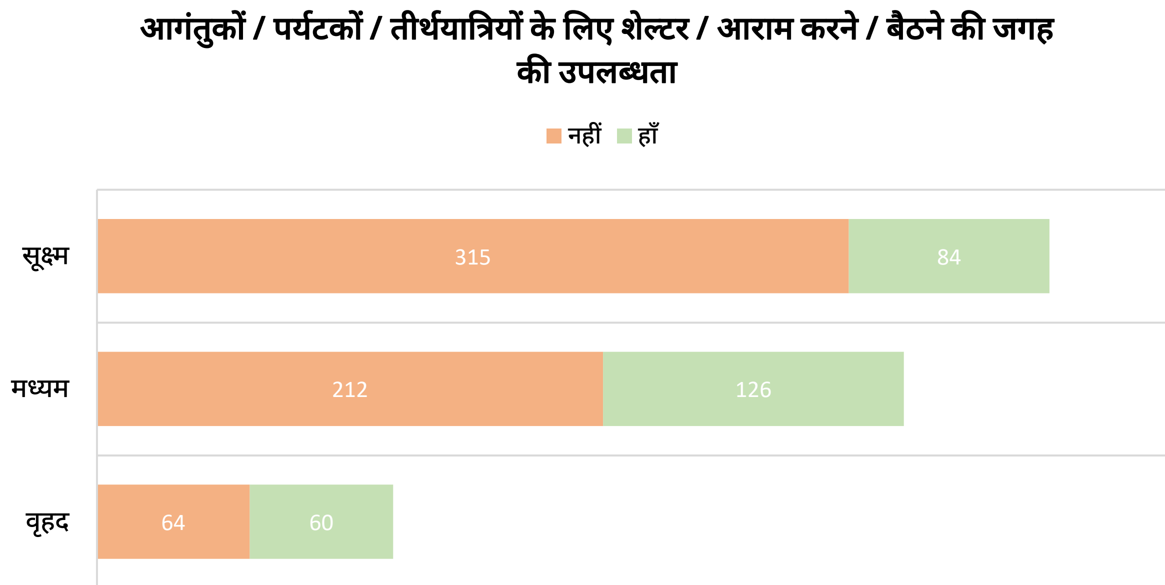

- 861 घाटों में से 591 घाटों पर शेल्टर या बैठने की व्यवस्था नहीं है, जो कुल घाटों का लगभग 68.64% है। इससे तीर्थयात्रियों को थकान या असुविधा का सामना करना पड़ सकता है । 124 वृहद आकार के घाटों में से 64 घाटों पर शेल्टर या बैठने की व्यवस्था नहीं है, जबकि 60 घाटों पर यह सुविधा उपलब्ध है। 338 मध्यम आकार के घाटों में से 212 घाटों पर शेल्टर की कमी है, जबकि 126 घाटों पर यह सुविधा उपलब्ध है। स्थानीय प्रशासन को प्राथमिकता के आधार पर इन सुविधाओं को बढ़ाने की आवश्यकता है विशेषकर वृहद एवं मध्यम आकार के

घाटों पर, ताकि आगंतुक/तीर्थयात्री/पर्यटक घाट पर आराम से समय बिता सकें और उनकी यात्रा सुखद एवं आरामदायक हो सके।

- कुल 271 घाट जहाँ शेल्टर या बैठने की व्यवस्था में से 154 स्थानों को "संतोषजनक" श्रेणी में रखा गया है, जो लगभग 57% है। इसका अर्थ है कि ये स्थान बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हैं, लेकिन इन्हें और बेहतर बनाने की गुंजाइश है।

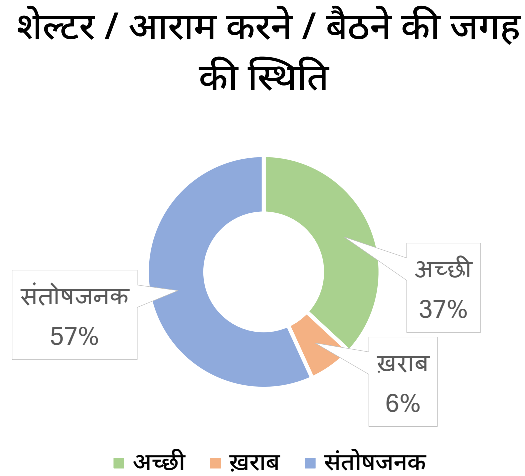

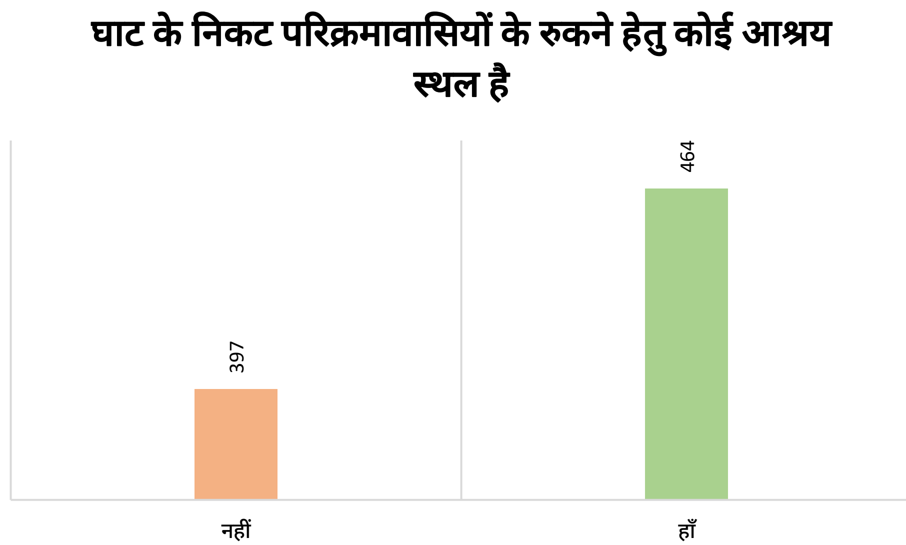

- कुल 861 घाटों में से 464 घाटों पर परिक्रमावासियों के ठहरने के लिए आश्रय स्थल उपलब्ध हैं, जो कुल का लगभग 54% है। इसका मतलब है कि लगभग आधे घाटों पर ही यह सुविधा उपलब्ध है। अधिकांश आश्रय स्थलों में "भोजन/अन्नक्षेत्र/सदाव्रत" और "आवास" दोनों ही सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

- सर्वेक्षित किये गए 861 घाटों में से 548 घाटों पर एवं उनके आस पास शवदाह की कोई सुविधा नहीं है, वृहद आकार के कुल 124 घाटों में से केवल 43 घाटों पर ही शवदाह की सुविधा उपलब्ध है, जो कुल का लगभग 35% है। जबकि 81 वृहद घाटों पर यह सुविधा नहीं है। मध्यम आकार के 338 घाटों में से 160 घाटों पर ही शवदाह की व्यवस्था है, जो कुल का लगभग 47% है। जबकि 178 मध्यम आकार के घाटों पर यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। वृहद और मध्यम आकार के घाटों पर शवदाह की सुविधाओं का अभाव स्पष्ट है, जो कि तीर्थयात्रियों और स्थानीय निवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण कमी है। प्रशासन को विशेष रूप से वृहद और मध्यम आकार के घाटों पर शवदाह की सुविधाएं बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए । इस हेतु निकटतम ग्राम पंचायत अथवा नगरीय निकाय को निर्देशित किया जा सकता है ।

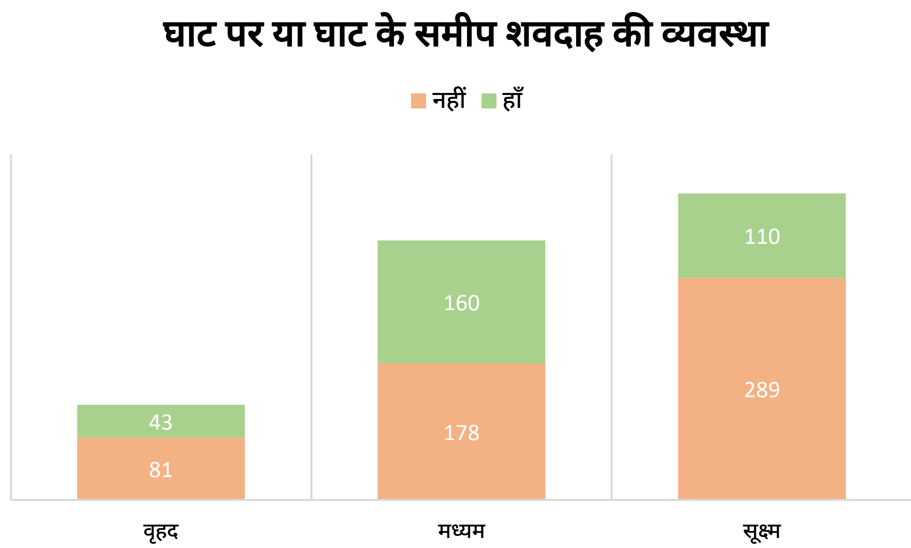

घाट पर कपड़े बदलने के स्थान की उपलब्धता			
घाट का आकार	नहीं	हाँ	कुल
मध्यम	284	54	338
वृहद	82	42	124
सूक्ष्म	384	15	399
कुल	750	111	861

- अधिकांश घाटों पर कपड़े बदलने की सुविधा उपलब्ध नहीं है, कुल 338 मध्यम आकार के घाटों में से केवल 54 घाटों पर कपड़े बदलने की सुविधा उपलब्ध है, जो कि कुल का लगभग 16% है। कुल 124 वृहद आकार के घाटों में से 42 घाटों पर कपड़े बदलने की सुविधा है, जो कि कुल का लगभग 34% है। कुल 399 सूक्ष्म घाटों में से मात्र 15 घाटों पर कपड़े बदलने की सुविधा उपलब्ध है, जो कि कुल का केवल 3.75% है। 861 घाटों में से केवल 111 घाटों पर कपड़े बदलने की व्यवस्था है, जो कि कुल का मात्र 12% है।
- 111 घाट जहाँ कपड़े बदलने की व्यवस्था उपलब्ध है, उन में से 58% सुविधाओं की स्थिति को "संतोषजनक" माना गया है। केवल 13% सुविधाओं को "अच्छा" माना गया है, वहीं 29% सुविधाएँ "खराब" स्थिति में हैं ।

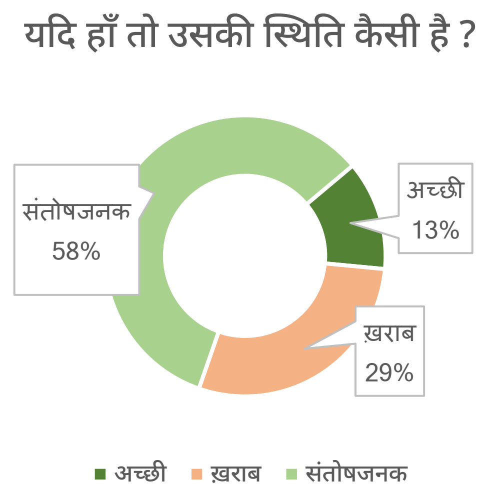

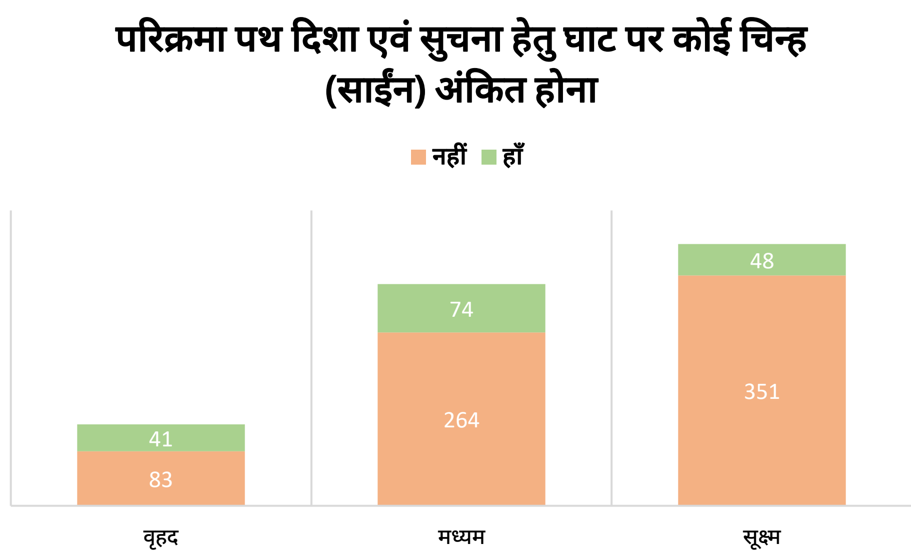

- कुल 861 घाटों में से केवल 163 घाटों पर ही परिक्रमा पथ के दिशा और सूचना हेतु चिन्ह (साइन) अंकित हैं, जबकि 698 घाटों पर इस सुविधा का अभाव है। 33% वृहद आकार के घाटों पर संकेतकों की व्यवस्था है, सीहोर जिले में 56 घाट, 29 पर संकेत, जो सबसे अधिक प्रतिशत है (लगभग 52%)। वहीं सिवनी जिले में सर्वेक्षित किये गए जिले में 21 घाटों में किसी भी घाट पर संकेत उपलब्ध नहीं हैं। परिक्रमा वासियों एवं पर्यटकों की सुविधा हेतु वृहद आकर के घाटों पर शत प्रतिशत चिन्ह (साइन) की उपलब्धता योजना निर्माण की आवश्यकता है साथ ही साथ यह सुनिश्चित किया जा सकता है की यह चिन्ह (साइन) का स्वरूप समस्त जिलों एवं घाटों पर एक सामान हो ।
- कुल 861 घाटों में से 807 घाटों पर कोई सुरक्षा संकेत या अवरोधक नहीं हैं, जबकि केवल 54 घाटों पर ही यह व्यवस्था उपलब्ध है। यह दर्शाता है कि सुरक्षा संकेतों और अवरोधकों की कमी है, जो तीर्थयात्रियों और आगंतुकों की सुरक्षा के लिए एक गंभीर चिंता का विषय हो सकता है।

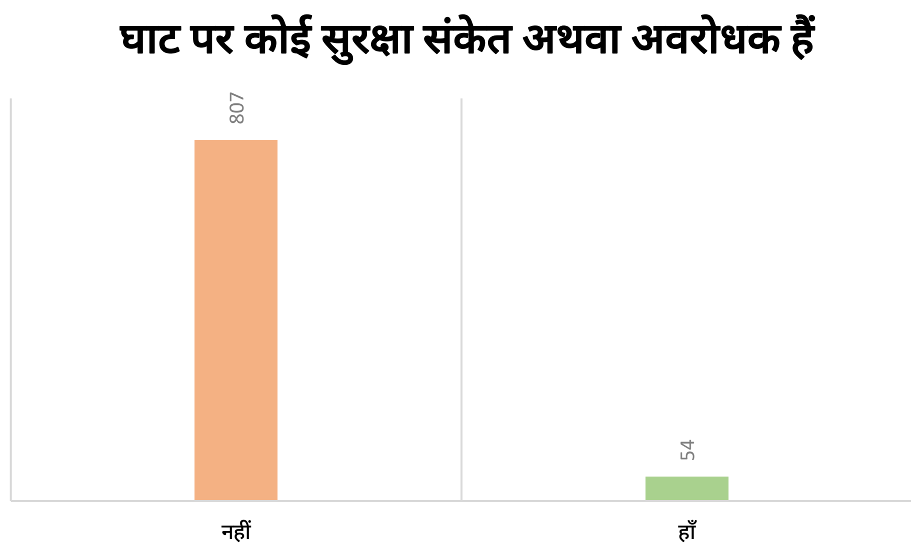

स्वच्छता संबंधी बिंदु:

घाट पर कचरा प्रबंधन प्रणाली की उपलब्धता				
क्र.	जिले का नाम	नहीं	हाँ	कुल
1.	अनूपपुर	50	-	50
2.	अलीराजपुर	14	1	15
3.	खंडवा	41	1	42
4.	खरगोन	37	9	46
5.	जबलपुर	63	9	72
6.	डिंडोरी	83	11	94
7.	देवास	34	3	37
8.	धार	36	15	51
9.	नरसिंहपुर	72	5	77
10.	नर्मदापुरम	73	3	76
11.	बड़वानी	33	3	36
12.	मंडला	88	10	98
13.	रायसेन	46	5	51
14.	सिवनी	18	3	21
15.	सीहोर	56	-	56
16.	हरदा	37	2	39
	कुल	781	80	861

- इस तालिका में घाटों पर कचरा प्रबंधन प्रणाली की उपलब्धता को दर्शाया गया है। कुल 861 स्थानों में से केवल 80 स्थानों पर ही कचरा प्रबंधन की सुविधा उपलब्ध है, जबकि 781 स्थानों पर यह व्यवस्था नहीं है। यह दर्शाता है कि कचरा प्रबंधन के मामले में घाटों की स्थिति अत्यंत असंतोषजनक है, जो स्वच्छता और पर्यावरण के लिए बड़ी चुनौती है। आवश्यक है की तीर्थयात्रियों की सुविधा और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए स्थानीय प्रशासन को घाटों हेतु पृथक से कचरा प्रबंधन प्रणाली की स्थापना को प्राथमिकता देनी चाहिए। इससे न केवल स्वच्छता में सुधार होगा, बल्कि धार्मिक और पर्यावरणीय स्थलों की पवित्रता भी बनी रहेगी।

- उक्त 781 घाट जहाँ कचरा प्रणाली का आभाव है, उन घाटों में से केवल 332 घाटों पर स्वच्छता पायी गई, जबकि 449 घाट एवं उनके आस पास के क्षेत्र अस्वच्छ पाए गए ।

घाटों एवं उसके आस पास के क्षेत्र की स्वच्छता

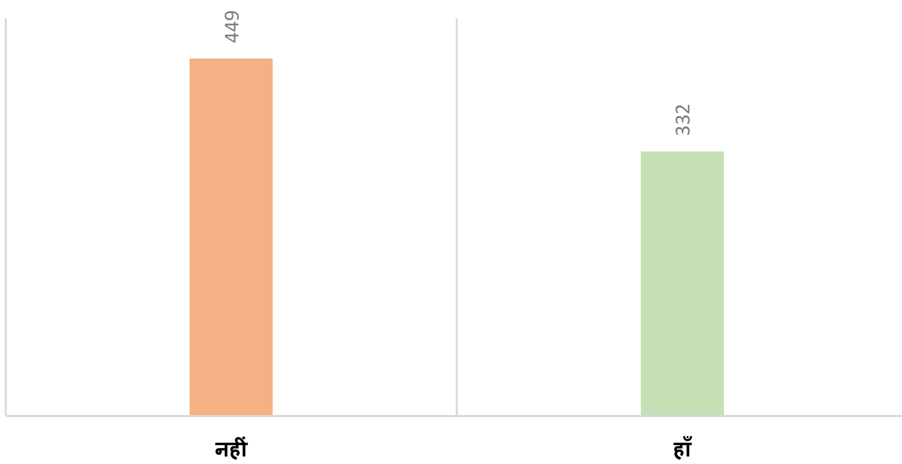

पर्यावरण संबंधी बिंदु:

जिले का नाम	कृषि का प्रकार			कुल
	जैविक	प्राकृतिक	रासायनिक	
अनूपपुर	-	2	38	40
अलीराजपुर	2	10	-	12
खंडवा	-	33	2	35
खरगोन	2	10	18	30
जबलपुर	15	38	13	66
डिंडोरी	4	46	30	80
देवास	-	10	21	31
धार	-	-	48	48
नरसिंहपुर	-	8	67	75
नर्मदापुरम	-	-	73	73
बड़वानी	-	-	32	32
मंडला	10	42	-	52
रायसेन	6	3	30	39

जिले का नाम	कृषि का प्रकार			कुल
	जैविक	प्राकृतिक	रासायनिक	
सिवनी	-	-	17	17
सीहोर	1	-	51	52
हरदा	1	1	36	38
कुल	41	203	476	720

- कुल 861 घाटों में से 720 घाटों के निकट कृषि की जाती है, उक्त तालिका के आधार पर यह स्पष्ट है की 66 प्रतिशत से अधिक घाटों के निकट की जाने वाली खेती का प्रकार रासायनिक है, जिस से माँ नर्मदा के जल के प्रदूषित होने की सम्भावना अधिक है

वृहद आकार के घाट पर वनस्पति स्थिति

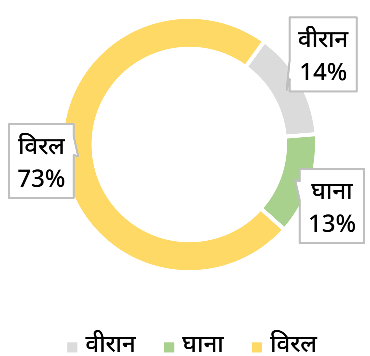

मध्यम आकर के घाट पर वनस्पति स्थिति

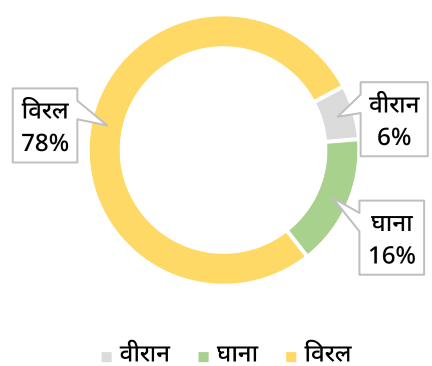

सूक्ष्म आकार के घाट पर वनस्पति स्थिति

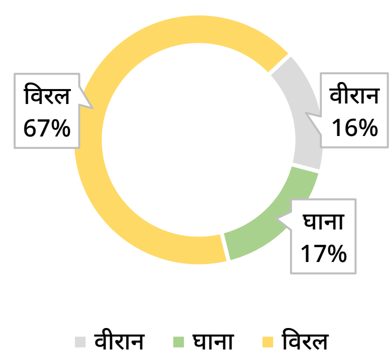

- तीनों आकार के घाटों में विरल वनस्पति का प्रतिशत सबसे अधिक है, जो बताता है कि अधिकतर घाटों पर वनस्पति फैलाव कम है। सूक्ष्म आकार के घाट पर वीरान क्षेत्र का प्रतिशत सबसे अधिक है। वृहद घाट पर वीरान क्षेत्र मध्यम आकार के घाट की तुलना में अधिक है। मध्यम आकार के घाट पर विरल वनस्पति प्रमुखता में है। जानकारी का विश्लेषण करने पर पता चलता है की जैसे-जैसे घाट का आकर बढ़ता है, वैसे-वैसे उसके आस पास की वनस्पति का घनत्व कम होता जाता है, वृहद घाटों के पास मानव गतिविधियाँ अधिक होती है, यह तथ्य

एक तरह से मानव गतिविधियों से वृहद घाटों के निकट हो रहे प्राकृतिक क्षति की ओर संकेत करता है ।

घाट के आस पास कोई नाला उपस्थित है जो नदी में गिरता हो				
जिले का नाम	घाट का आकार	नहीं	हाँ	कुल
अनूपपुर	मध्यम	22	-	22
	वृहद	3	-	3
	सूक्ष्म	22	3	25
अलीराजपुर	मध्यम	1	-	1
	सूक्ष्म	14	-	14
खंडवा	मध्यम	4	1	5
	वृहद	1	1	2
	सूक्ष्म	33	2	35
खरगोन	मध्यम	5	11	16
	वृहद	6	8	14
	सूक्ष्म	8	8	16
जबलपुर	मध्यम	33	2	35
	वृहद	3	1	4
	सूक्ष्म	31	2	33
डिंडोरी	मध्यम	27	5	32
	वृहद	6	1	7
	सूक्ष्म	51	4	55
देवास	मध्यम	7	1	8
	वृहद	2	1	3
	सूक्ष्म	17	9	26
धार	मध्यम	9	14	23
	वृहद	3	2	5
	सूक्ष्म	8	15	23
नरसिंहपुर	मध्यम	21	10	31
	वृहद	8	4	12
	सूक्ष्म	22	12	34
नर्मदापुरम	मध्यम	36	17	53
	वृहद	11	6	17

घाट के आस पास कोई नाला उपस्थित है जो नदी में गिरता हो				
जिले का नाम	घाट का आकार	नहीं	हाँ	कुल
	सूक्ष्म	6	-	6
बड़वानी	मध्यम	7	1	8
	वृहद	-	1	1
	सूक्ष्म	25	2	27
मंडला	मध्यम	39	13	52
	वृहद	17	5	22
	सूक्ष्म	20	4	24
रायसेन	मध्यम	8	4	12
	वृहद	17	10	27
	सूक्ष्म	8	4	12
सिवनी	मध्यम	2	-	2
	सूक्ष्म	15	4	19
सीहोर	मध्यम	10	14	24
	वृहद	1	4	5
	सूक्ष्म	11	16	27
हरदा	मध्यम	14	-	14
	वृहद	2	-	2
	सूक्ष्म	22	1	23
कुल		638	223	861

- इस तालिका के अनुसार, कुल 861 घाटों में से 223 घाट ऐसे हैं जिनके पास कोई नाला है जो नदी में गिरता है, जबकि 638 घाट ऐसे हैं जहाँ ऐसा कोई नाला नहीं है। मध्यम आकार के 338 घाटों में से 245 के पास कोई नाला नहीं है, जबकि 93 के पास नाला है जो नदी में गिरता है। वृहद आकार के घाटों पर, विशेष रूप से खरगोन, रायसेन, नर्मदापुरम, मंडला एवं नरसिंहपुर जिलों में नालों की उपस्थिति अधिक है। सूक्ष्म आकार के घाटों में नालों की उपस्थिति मध्यम और वृहद आकार की तुलना में कम है, लेकिन धार, देवास, नरसिंहपुर, सीहोर एवं खरगोन जैसे जिलों में सूक्ष्म घाटों के पास नालों की मौजूदगी नजर आती है।

- 616 सर्वेक्षण में यह बात दर्ज हुई की प्राकृतिक अथवा मानव गतिविधियों से घाट की संरचना या पर्यावरण को खतरा है। खतरों का प्रारूप में प्रमुख हैं :घाट पर मिट्टी का कटाव (348 बार आवृत्ति) और पालीथीन का प्रयोग (204 बार आवृत्ति) से संबंधित मुद्दे, डिटर्जेंट एवं साबुन का प्रयोग (186 आवृत्ति) हैं, अन्य महत्वपूर्ण कारण हैं: गंदा नाला (78 बार आवृत्ति), सीवेज का पानी (78 बार आवृत्ति) और घाट पर अतिक्रमण (121 बार आवृत्ति) ।

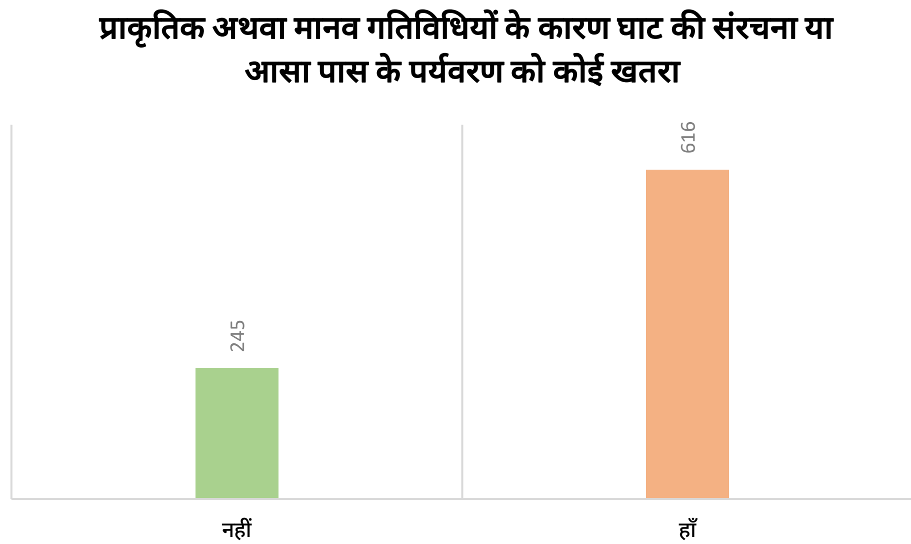

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व:

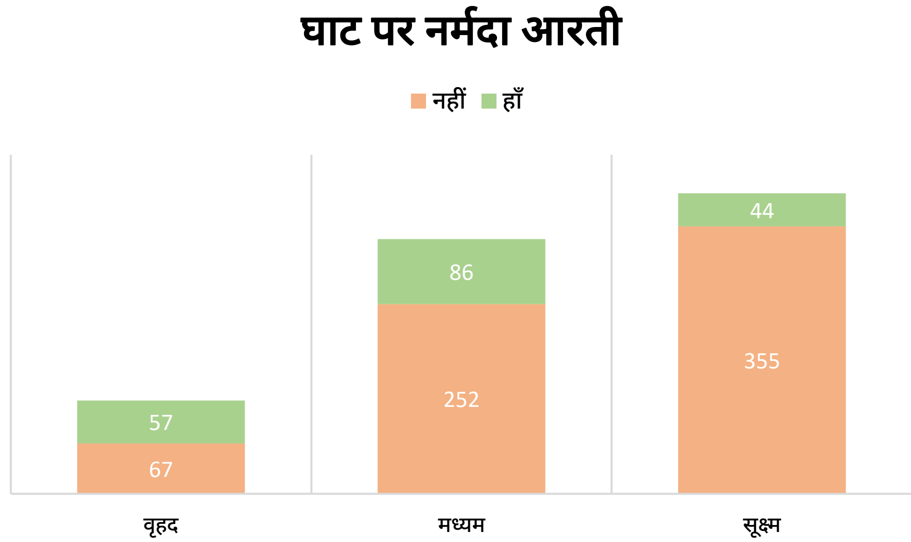

- कुल 861 घाटों में से केवल 187 घाटों पर ही नर्मदा आरती की व्यवस्था है, जो लगभग 22% है। वृहद आकार के 124 घाटों में से 57 घाटों पर नर्मदा आरती की व्यवस्था है, मध्यम आकार के 338 घाटों में से केवल 86 घाटों पर ही नर्मदा आरती का आयोजन होता है, सूक्ष्म आकार के 399 घाटों में से केवल 44 घाटों पर ही नर्मदा आरती की व्यवस्था है । वृहद और मध्यम घाटों पर नर्मदा आरती की व्यवस्था बढ़ाई जानी चाहिए, क्योंकि इन घाटों पर श्रद्धालुओं की संख्या अधिक होती है। यह कदम न केवल धार्मिक अनुभव को समृद्ध करेगा बल्कि पर्यटकों को आकर्षित करने में भी सहायक हो सकता है।

घाट धार्मिक / सांस्कृतिक समारोह के लिए उपयोग किया जाता है				
जिले का नाम	घाट का आकार	नहीं	हाँ	कुल
अनूपपुर	मध्यम	11	11	22
	वृहद	1	2	3
	सूक्ष्म	16	9	25
अलीराजपुर	मध्यम	1	-	1
	सूक्ष्म	5	9	14
खंडवा	मध्यम	2	3	5
	वृहद	1	1	2

घाट धार्मिक / सांस्कृतिक समारोह के लिए उपयोग किया जाता है				
जिले का नाम	घाट का आकार	नहीं	हाँ	कुल
	सूक्ष्म	30	5	35
खरगोन	मध्यम	-	16	16
	वृहद	-	14	14
	सूक्ष्म	-	16	16
जबलपुर	मध्यम	3	32	35
	वृहद	-	4	4
	सूक्ष्म	10	23	33
डिंडोरी	मध्यम	4	28	32
	वृहद	-	7	7
	सूक्ष्म	4	51	55
देवास	मध्यम	-	8	8
	वृहद	-	3	3
	सूक्ष्म	3	23	26
धार	मध्यम	1	22	23
	वृहद	-	5	5
	सूक्ष्म	13	10	23
नरसिंहपुर	मध्यम	5	26	31
	वृहद	1	11	12
	सूक्ष्म	17	17	34
नर्मदापुरम	मध्यम	5	48	53
	वृहद	2	15	17
	सूक्ष्म	2	4	6
बड़वानी	मध्यम	1	7	8
	वृहद	-	1	1
	सूक्ष्म	11	16	27
मंडला	मध्यम	13	39	52
	वृहद	8	14	22
	सूक्ष्म	15	9	24
रायसेन	मध्यम	2	10	12
	वृहद	1	26	27
	सूक्ष्म	4	8	12

घाट धार्मिक / सांस्कृतिक समारोह के लिए उपयोग किया जाता है				
जिले का नाम	घाट का आकार	नहीं	हाँ	कुल
सिवनी	मध्यम	-	2	2
	सूक्ष्म	8	11	19
सीहोर	मध्यम	3	21	24
	वृहद	-	5	5
	सूक्ष्म	11	16	27
हरदा	मध्यम	9	5	14
	वृहद	-	2	2
	सूक्ष्म	21	2	23
कुल		244	617	861

- इस तालिका में विभिन्न जिलों के घाटों का धार्मिक/सांस्कृतिक समारोह के लिए उपयोग की स्थिति को दर्शाया गया है। इसे घाट के आकार (मध्यम, वृहद, सूक्ष्म) के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, कुल 861 घाटों में से 617 घाटों का धार्मिक/सांस्कृतिक समरोह हेतु उपयोग किया जाता है, मध्यम आकार के घाटों का धार्मिक/सांस्कृतिक समारोह के लिए उपयोग अधिक होता है। खरगोन, डिंडोरी, देवास, एवं जबलपुर में धार्मिक आयोजनों के लिए घाटों का व्यापक रूप से उपयोग होता है, विशेषकर खरगोन एवं डिंडोरी जिले में जहाँ सूक्ष्म घाटों का उपयोग भी अधिक है। हरदा, अलीराजपुर, एवं सिवनी जैसे जिलों में घाटों का उपयोग धार्मिक/सांस्कृतिक समारोह के लिए अपेक्षाकृत कम है।
- घाटों के निकट स्थित धरोहर: अधिकांश सर्वेक्षण में धरोहरों के रूप में मंदिर का उल्लेख है, अकेले मंदिर से संबंधित प्रविष्टियों की संख्या सबसे अधिक है (281 प्रविष्टियां), और कई अन्य संयोजनों में भी मंदिर शामिल हैं। कई स्थानों पर आश्रम भी मौजूद हैं, जो कुल 136 प्रविष्टियों में पाए गए हैं। वृक्ष और वनस्पति भी 91 स्थानों पर मौजूद हैं, जो पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इनकी संख्या तुलनात्मक रूप से कम है, परंतु ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

- माँ नर्मदा के घाटों पर मनाये जाने वाले प्रमुख त्योहारों में माघ शुक्ल सप्तमी - नर्मदा जयंती, पूर्णिमा एवं अमावस्या, मकर संक्रांति, वैशाख शुक्ल सप्तमी, गंगा दशमी प्रमुख हैं[11] ।

क्र.	जिलों के नाम	प्रमुख त्यौहार
1.	अनूपपुर	नर्मदा जयंती, महा शिवरात्रि, नवरात्रि, होली, पूर्णिमा, अमावस, मकर संक्रांति
2.	अलीराजपुर	दिवाली, दिवासा, होली, हनुमान जयंती
3.	खंडवा	नर्मदा जयंती, महाशिवरात्रि, तीज, गणगौर
4.	खरगोन	गणगौर, गणेश विसर्जन, माता विसर्जन, निमाड़ उत्सव
5.	जबलपुर	सभी प्रमुख त्यौहार, विशेष रूप से नर्मदा जयंती
6.	डिंडोरी	नर्मदा जयंती, मकर संक्रांति, शिवरात्रि
7.	देवास	शिवरात्रि, नर्मदा जयंती, अमावस्या
8.	धार	गणगौर, सभी प्रमुख त्यौहार और कथाएँ
9.	नरसिंहपुर	मकर संक्रांति, नर्मदा जयंती
10.	नर्मदापुरम	नवरात्र, रामलीला, दिवाली, नर्मदा जयंती
11.	बड़वानी	नर्मदा जयंती, शिवरात्रि, दत्तात्रेय जयंती
12.	मंडला	नर्मदा जयंती, गणेश विसर्जन
13.	रायसेन	मकर संक्रांति, नर्मदा जयंती मेला
14.	सिवनी	नर्मदा जयंती, मकर संक्रांति
15.	सीहोर	नवरात्रि, राम नवमी, नर्मदा जयंती
16.	हरदा	नर्मदा जयंती, अमावस्या, पूर्णिमा

[11] Upasani, N. a. S. D., & Murugkar, N. D. K. (2024). Investigating Role of Intangible Cultural Heritage in constructing the phenomenon of Narmada River Parikrama. *Deleted Journal*, *2*(04), 993–999. https://doi.org/10.47392/irjaem.2024.0132

प्रमुख सुझाव:

सामान्य सुझाव:

- राज्य शासन को माँ नर्मदा के घाटों के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार हेतु चरणबद्ध रूप से योजना निर्मित करने की आवश्यकता है, इस योजना के अंतर्गत सर्वप्रथम वृहद घाटों को सम्मिलित किया जाए, तत्पश्चात मध्यम एवं अंत में सूक्ष्म घाटों पर ध्यान केन्द्रित किया जाए

- प्रत्येक जिले में मॉडल घाट की स्थापना की जा सकती है, इस हेतु वाराणसी के नमो घाट एवं उत्तराखंड के चण्डी घाट से प्रेरणा ली जा सकती है। ऐसे मॉडल घाट पर तीर्थयात्रियों / पर्यटकों /आगंतुकों हेतु सम्पूर्ण सुविधाओं की व्यवस्था की हो, इस घाट को आधार बनाकर अन्य घाटों के कायाकल्प का कार्य किया जा सकता है।

चंडी घाट, उत्तराखंड
(स्त्रोत: Transforming Urban Landscape in India Compendium, NIUA)

- जिले के प्रभारी मंत्री/जिला कलेक्टर/जिला पंचायत सीइओ/ एवं अन्य अधिकारी जिले के प्रमुख घाटों पर रात्रि विश्राम एवं रात्रि चौपाल का कार्यक्रम आयोजित कर वहां आने वाले तीर्थयात्रियों / पर्यटकों /आगंतुकों एवं स्थानीय रहवासियों की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित निराकरण का कार्य भी कर सकते हैं ।
- सर्वेक्षण में लगभग 379 घाटों के निकट धरोहर स्थल हैं, जिनका संरक्षण और प्रचार-प्रसार आवश्यक है। धरोहर स्थलों के संरक्षण हेतु उचित उपाय किए जाएं और इनके महत्व को बताने के लिए सूचना पाटों का निर्माण किया जाए। सूचना पाटों पर आपातकालीन स्थिति में संपर्क

हेतु टिकटतम पुलिस चौकी एवं स्वास्थ्य केंद्र का संपर्क क्रमांक भी अंकित होना चाहिए । घाटों पर सूचना हेतु डिजिटल साईन बोर्ड का उपयोग किया जा सकता है, जिसे समय-समय पर अपडेट किया जा सके ।

- माँ नर्मदा की 41 से अधिक सहायक नदियाँ हैं इन नदियों के माँ नर्मदा के साथ संगम स्थल धार्मिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व है, संगम पर स्थिति घाटों को विशेष योजना अधीन विकसित किया जा सकता है ।
- तवा संगम स्थल पर कार्तिक पूर्णिमा मेला, अमरकंटक में महाशिवरात्रि मेला, नरसिंहपुर में बरमान मेला, एवं खंडवा में ओंकारेश्वर मेला पर्यटन एवं धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महतवपूर्ण हैं, यहाँ स्थित घाटों को इन मेलों के व्यवस्थित आयोजन हेतु तैयार करने से यहाँ की स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा ।
- परिक्रमावासियों का डाटाबेस तैयार करने की आवश्यकता है, जिस से परिक्रमावासियों का उचित प्रबंधन किया जा सके एवं उन्हें उच्चतम सुविधाएँ प्रदान की जा सकें, इस हेतु ओंकारेश्वर एवं अमरकंटक में परिक्रमावासियों का नियमित पजीकरण की सुविधा शासन द्वारा प्रदान की जानी चाहिए ।

आधारभूत संरचना:

- सर्वेक्षण के अनुसार, अधिकांश घाटों पर कचरा प्रबंधन प्रणाली उपलब्ध नहीं है। यह न केवल पर्यावरणीय प्रदूषण को बढ़ाता है बल्कि घाटों के सौंदर्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। घाटों पर नियमित कचरा प्रबंधन और संग्रहण प्रणाली स्थापित की जाए। इसके लिए पंचायतों और नगर निकायों जिम्मेदारी सुनिश्चित कर ठोस कचरा प्रबंधन का कार्य किया जाना चाहिए। स्वच्छता की नियमित निगरानी हेतु स्थानीय श्रमदान मंडली अथवा निकटम आश्रम प्रबंधन को अधिकृत किया जा सकता है ।

- लगभग 69% घाटों पर बैठने और आराम करने की उचित व्यवस्था उपलब्ध है। सभी महत्वपूर्ण घाटों पर पर्यटकों के लिए बैठने, छायादार स्थानों एवं पेयजल व्यवस्था, की स्थापना की जाए। इससे पर्यटकों को सुविधा मिलेगी और पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। इस कार्य हेतु स्थानीय संगठनों जैसे व्यापारी संगठन, अधिवक्ता संगठन, चिकित्सक संगठन आदि का सहयोग लिया जा सकता है ।
- घाटों पर रात्रि में पर्याप्त प्रकाश हेतु सोलर स्ट्रीट लाइट के उपयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है, एक अध्ययन[12] अनुसार "सौर ऊर्जा से चलने वाली एलईडी स्ट्रीट लाइटों का उपयोग करके, लागत के साथ-साथ ऊर्जा की खपत को भी काफी हद तक कम करना संभव है" ।

समावेशिता:

- घाटों को दिव्यांग अनुकूल बनाने हेतु, घाटों रैंप का निर्माण किया जा सकता है जिस से घाटों पर सुगमता में वृद्धि हो सके ।
- आंकड़ों के अनुसार, कुछ ही घाटों पर महिलाओं के लिए पृथक शौचालय की व्यवस्था है, जिससे महिलाओं को असुविधा का सामना करना पड़ता है। महिलाओं की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखते हुए सभी प्रमुख घाटों पर महिला शौचालय बनाए जाएं।

[12] Silpa, B., Ahmed, N., Sudeepthi, A., & Abdul, H. (2017). *Cost Benefits of Solar-powered LED Street Lighting System: Case Study - American University of Sharjah, UAE*. *International Research Journal of Engineering and Technology (IRJET)*, 4(2), 11-16. Retrieved from https://www.irjet.net/

- नर्मदा समग्र द्वारा गत 15 वर्षों से नर्मदा में चालित चिकित्सालय (यानी नदी एम्बुलेंस) का संचालन किया जा रहा है। इसकी नींव तत्कालीन राज्यसभा सदस्य अनिल माधव दवे द्वारा रखी गई थी। उनके निधन के बाद भी यह सुविधा बंद नहीं हुई है और इसका लगातार संचालन जारी है। चार जिलों के 37 ग्राम के लोगों की कर रहे हैं सेवा मध्यप्रदेश के धार जिले के डही क्षेत्र तथा बड़वानी के आठ-आठ गांव, आलीराजपुर जिले के 12 गांव तथा महाराष्ट्र प्रांत के नंदुरबार जिले के आठ गांव सहित गुजरात प्रांत का एक गांव मिलाकर 37 गांव में संस्था सेवा देती आ रही है। ज्ञात रहे कि इन ग्रामों में जलमार्ग ही एकमात्र विकल्प है। मध्य प्रदेश शासन द्वारा चालित चिकित्सालय की संख्या का विस्तार नर्मदा प्रवाह क्षेत्र में आने वाले अन्य जिलों में किया जा सकता है जिस से स्थानीय निवासियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिलेगा ।

प्रदेश में संचालित वाटर एम्बुलेंस

वित्तीय प्रबंधन:

- सांसद आदर्श ग्राम योजना की तर्ज पर विधायक आदर्श घाट योजना का आरंभ किया जा सकता है, जिस में प्रदेश के विधायक माँ नर्मदा के प्रमुख घाटों को गोद लेकर इनके कायाकल्प के कार्यों में सहयोग प्रदान कर सकते हैं ।

- घाटों पर योग एवं ध्यान केंद्र/पार्क का निर्माण किया जा सकता है इससे घाट पर नियमित धार्मिक आगंतुकों के अलावा वेलनेस और योग टूरिज्म में रुचि रखने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। इस स्पेस में निर्देशित ध्यान सत्र, योग कार्यशालाएं, और ध्यान पर केंद्रित रिट्रीट का आयोजन करके स्थानीय पर्यटन को और भी बढ़ावा दिया जा सकता है।

वाराणसी के नमो घाट पर योग स्थान

- स्थानीय शिल्प और हस्तकला का प्रदर्शन: घाट पर स्थानीय कारीगरों को अपने पारंपरिक शिल्प को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया जा सकता है । जिससे ये कला रूप संरक्षित होंगे एवं पर्यटकों को आकर्षित करेंगे। यह स्थानीय कारीगरों को रोजगार का अवसर भी प्रदान करेगा।
- घाटों के विकास हेतु एवं परिक्रमा पथ के विकास हेतु ग्राम पंचायतों को आवंटित मनरेगा निधि का उपयोग किया जा सकता है, पंचायत निधि से निर्माण होने के कारण इन पर अतिक्रमण की संभावना कम होगी एवं ग्रामवासियों में इन संरचनाओं के प्रति दायित्व का भाव उत्पन्न होगा।

पर्यावरण संरक्षण:

- घाटों पर "वेस्टिंग वेल"[13] प्रणाली का उपयोग किया जा सकता है, जिसमें घाटों पर उत्पन्न जैविक और अन्य कचरे का उचित और पर्यावरण-सम्मत तरीके से प्रबंधन किया जाता है । इस अवधारणा का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय परंपराओं और समुदाय की आवश्यकताओं का भी सम्मान करना है जिस में प्रमुख हैं कचरे के विभाजन: घाटों पर बायोडिग्रेडेबल (जैविक) और नॉन-बायोडिग्रेडेबल (प्लास्टिक, धातु आदि) कचरे के लिए अलग-अलग डस्टबिन लगाए जाते हैं। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि धार्मिक गतिविधियों से निकलने वाला कचरा, जैसे फूल और पत्तियाँ, कम्पोस्टिंग के लिए उपयुक्त होते हैं और इन्हें नदी में फेंकने की बजाय खाद बनाने में उपयोग किया जा सकता है। जैविक कचरे की कम्पोस्टिंग: पूजा-अर्चना के बाद जो फूल और पत्तियाँ बच जाती हैं, उन्हें नदी में फेंकने के बजाय इकट्ठा कर कम्पोस्ट किया जाता है। इस तरह से बनाए गए कम्पोस्ट का उपयोग आसपास के बगीचों में किया जा सकता है या इसे बेचा जा सकता है, जिससे कचरे को एक संसाधन में बदला जा सकता है। गैर-जैविक कचरे का पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग: प्लास्टिक, धातु और कांच जैसे गैर-जैविक कचरे को अलग से एकत्र कर पुनर्चक्रण के लिए भेजा जाता है। कुछ परियोजनाओं में इन सामग्रियों को अपसाइकिल करके ईको-फ्रेंडली ईंट, कला सामग्री या अन्य वस्तुएँ बनाने का प्रयास भी किया जाता है। जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी: "वेस्टिंग वेल" का एक मुख्य हिस्सा लोगों को कचरे के प्रभाव के बारे में जागरूक करना है। इसके लिए संकेतक बोर्ड, स्वयंसेवक, और स्थानीय समुदाय के नेता महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और आगंतुकों को जिम्मेदार व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
- प्रतिमा विसर्जन के लिए घाटों पर पृथक से विसर्जन कुंड की व्यवस्था की जा सकती है, इससे त्योहारों पर पूजा सामग्री के विसर्जन से नदी में होने वाले प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

---

[13] Sinha, A. (2018). Ghats on the Ganga in Varanasi, India: A Sustainable Model for Waste Management. *Landscape Journal*, *37*(2), 65–78. https://doi.org/10.3368/lj.37.2.65

- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु प्रमुख घाटों पर वेस्ट ट्रैप लगाये जा सकते हैं[14] विशेषकर शहर से निकलने वाले बरसाती नाले जो शहरों की गंदगी नदी प्रवाहित करते हैं उन पर इस प्रकार का संयंत्र को स्थापित करने की आवश्यकता है ।

बनाड्लोंग वेस्ट ट्रैप, मलेशिया

- अहमदाबाद में साबरमती नदी के जल को स्वच्छ बनाने हेतु बाईओ रिमेडीएशन[15] प्रक्रिया का उपयोग किया जा रहा है, इस प्रक्रिया का विस्तृत अध्ययन कर इस प्रक्रिया को माँ नर्मदा के प्रमुख घाटों पर उपयोग में लाया जा सकता है ।
- माँ नर्मदा के जल को कृषि में प्रयोग होने वाले रसायनों से सुरक्षित करने हेतु माँ नर्मदा के निकट 1000 मीटर के क्षेत्र में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है । जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु कृषकों निश्चित समय अवधी (न्यूनतम 3 वर्ष) के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा सकता है, इस अवधी में कृषकों द्वारा अपनी फसल हेतु जैविक उत्पाद सर्टिफिकेशन प्राप्त किया जा सकता है, जिससे वे अपनी फसल हेतु अधिक मूल्य प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं, इसे "पेयमेंट फॉर एनवायरनमेंट सर्विस फाइनेंस मैकेनिज्म"[16] कहा जाता है ।

---

[14] Shah, M. N. M., Ahmad, F., Abdullah, M. S., Musa, M. K., Abidin, N. I., Harun, H., Hamid, N. H. A., Awang, M., Rahman, M. a. A., Hamidon, N., Yusop, F. M., Mustafa, M. S. S., Kamil, N. A., & Lee, T. Y. (2021). Design and development of trash trap of stream for mini hydro. *Materials Today Proceedings*, *46*, 2105–2111. https://doi.org/10.1016/j.matpr.2021.05.435

[15] Tnn. (2024, September 25). 786 MLD of sewage to be treated using bioremediation method. *The Times of India*. https://timesofindia.indiatimes.com/city/ahmedabad/786-mld-of-sewage-to-be-treated-using-bioremediation-method/articleshow/113677672.cms

[16] World Conservation Union. (2006). *Incentives that work for farmers and wetlands: A case study from the Bhoj Wetland, India*.

- प्लास्टिक पर प्रतिबंध: घाटों पर प्लास्टिक थैलियों और अन्य हानिकारक सामग्री जैसे साबुन, सर्फ़, शैम्पू के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।

जनभागीदारी:

- घाटों पर पर्यटकों /आगंतुकों की संख्या में वृद्धि हेतु स्थानीय सोशल मीडिया इन्फ्लूऐंसर को साथ लाया जा सकता है, एवं उन्हें घाटों के समृद्ध इतिहास एवं गौरवशाली संस्कृति पर कंटेंट क्रिएशन हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है ।
- घाटों पर विशेष रूप से वृहद एवं मध्यम आकार के घाटों पर घाट सेवा मित्र (वालंटियर) को एक वर्ष की सीमित अवधि के लिए नियुक्त किया जा सकता है, घाट सेवा मित्र के चयन हेतु स्थानीय युवा प्रतिभा को प्रोत्साहित किया जा सकता है । घाट सेवा मित्र का प्रमुख कार्य घाट पर आने वाले तीर्थयात्रियों/ पर्यटकों/ परिक्रमा वासियों का रिकॉर्ड रखने, उनको आवश्यक सहायता एवं जानकारी प्रदान करने, एवं आपातकाल की स्थिति में स्थानीय प्रशासन को सूचित करने का रहेगा ।
- घाटों के प्रति जन जुड़ाव को बढ़ावा देने हेतु घाटों का नाम परिवर्तित किया जा सकता है, वृहद घाट का नाम प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी, पौराणिक एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व के नाम पर रखा जा सकता है । सूक्ष्म घाटों का नाम स्थानीय क्षेत्र के शहीदों के नाम पर रखा जा सकता है ।

संलग्नक: जिले वार अवलोकन हेतु प्रमुख विषय

ज़िला अनूपपुर

- माँ नर्मदा उदगम कुंड, अमरकंटक मंदिर में स्वच्छता का स्तर अच्छा है, मंदिर का उत्तर तट द्वार का आकार संतोष जनक है परन्तु दक्षिण तट द्वार का आकार भीड़ वाले दिनों के हिसाब से संतोष जनक नहीं है । त्यौहार के समय ज्यादा श्रद्धालुओं का आगमन होता है प्रवेश एवं निकास में समस्या होती है। भविष्य में आस पास के क्षेत्र के विकास को ध्यान में रखते हुए, उचित आकार के द्वार विकसित किए जा सकते हैं ।

माँ नर्मदा उदगम कुंड, अमरकंटक दक्षिण द्वार

- सर्वे किये गए 50 घाटों में से 16 घाटों तक पूर्णतः पक्का पहुच मार्ग है, 9 घाटों तक अर्ध पक्का, 21 घाटों तक कच्ची सड़क/पगडंडी वाला रास्ता है, 4 घाटों तक दुर्गम/पहाड़ी मार्ग है ।
- केवल 4 घाटों के समीप सामुदायिक/सार्वजनिक शौचालय उपलब्ध हैं एवं 3 घाटों पर कपडे बदलने का स्थान उपलब्ध है ।
- कबीर चबूतरा की वर्तमान सीमा अभी डिंडोरी जिला एवं छत्तीसगढ़ राज्य में लगती है , इसका स्पष्ट निर्धारण करना चाहिए एवं स्थान पर मूलभूत सुविधाओं की संतोषजनक स्थिति सुनिश्चित करनी चाहिए ।
- नर्मदा नदी में पोलीथिन, साबुन डिटर्जेंट उपयोग, रेट उत्खनन गतिविधियां पूर्णतः प्रतिबंधित करते हुए इसका पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए ।

जिला डिंडोरी

- पक्के मार्गों का अभाव होने के कारण घाटों तक पहुँचने के लिए पैदल चलना पड़ता है। जैसे कि तेंदुदीह छीरपानी और हर्रा टोला, मेंहदवानी विकासखंड में स्थित हैं।
- कुछ घाटों तक पहुँचने के लिए खड़ी चट्टानों के कारण ट्रेकिंग करनी पड़ती है। मुंडी, डोकरघाट, मुंगटोला यह सभी मेंहदवानी विकासखंड में स्थित हैं।
- क्षेत्र में नेटवर्क न होने से नेविगेशन में कठिनाई होती है, जिससे गलत रास्ते पर जाने की संभावना बढ़ जाती है। जैसे सूरजपुरा, मुंडी, डोकरघाट मेंहदवानी विकासखंड में, पत्थरकूचा, शोभापुर, लिखनी जो बजाग विकासखंड में स्थित है ।
- बजाग और करंजिया क्षेत्र के पास बांध निर्माण के प्रस्ताव से स्थानीय ग्रामीणों में असंतोष है जिस वजह से यहाँ आने वाले पर्यटकों को स्थानीय जनता के आक्रोश का सामना करना पड़ता है ।
- जिले में स्थित शंकर घाट एवं डेम घाट के विकास को आधार बनाते हुए जिले के अन्य घाटों का विकास किया जाना चाहिए ।
- माँ नर्मदा की सहायक नदी बुदनेर का उद्गम मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ सीम क्षेत्र में होता है, यह क्षेत्र बैगा जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है, बुदनेर नदी एवं माँ नर्मदा का संगम बैगा जनजाति हेतु महतवपूर्ण है यहाँ दगोना मेला आयोजित किया जाता है, इस स्थान पर स्थित घाटों को विशेष रूप से विकसित करने की आवश्यकता है ।

ज़िला मण्डला

- परिक्रमा क्षेत्र में आने वाले घाटों पर आश्रम के निर्माण की अवश्यक्ता है ताकि परिक्रमावासी को निर्गम घाटों में रुकने की सुविधा हो सके ।
- मण्डला विकासखंड के रपटा घाट का नाम परिवर्तित कर महिष्मति घाट किया गया इसी प्रकार अन्य महत्वपूर्ण घाटों का नामकरण एवं नाम परिवर्तन किया जाना चाहिए ।
- महिष्मति घाट (पूर्व रपटा घाट) पर देवउठनी ग्यारस से पंचमहाकोशी आरती प्रारंभ की गई जो की गंगा आरती एवं जबलपुर की ग्वारीघाट आरती के समान है इसी प्रकार अन्य महत्वपूर्ण घाट जैसे संगम घाट पर ऐसी ही आरती प्रारंभ होनी चाहिए ताकि ज़िला मण्डला धार्मिक पर्यटन का ज़िला भी बन सके ।
- बरगी बांध के निर्माण के कारण इस क्षेत्र में स्थित ग्राम उचें क्षेत्र में स्थानांतरित हो गए हैं नवस्थापित ग्रामों में आधारभूत सुविधाएं जैसे पहुँच मार्ग उपलब्ध नहीं हैं । बीजाडांडी एवं नारायणगंज के बहुत सारे घाटों पर मूलभूत सुविधाओं का अभाव है जैसे घाट पर चढ़ने एवं उतरने हेतु सीढ़ी, कपड़े बदलने हेतु चेजिंग रूम्स, बिजली व्यवस्था इत्यादि । इस क्षेत्र के विकास से स्थानीय समुदायों हेतु आय के अन्य स्त्रोत उत्पन्न होंगे एवं यहाँ से हो रहे पलायन की समस्या पर भी नियंत्रण लगेगा ।
- मण्डला विकासखंड के सहस्रधारा घाट एक धार्मिक एवं पर्यटक स्थान है यहाँ शाम होने के पश्चात असामाजिक तत्व अनैतिक गतिविधियां करते हैं, जो आगंतुकों /पर्यटकों/ तीर्थयात्रियों की सुरक्षा की दृष्टि से सही नहीं है तथा इससे आम जन की धार्मिक भावनाओं को भी ठेस पहुँचती है ।
- मोहगांव विकासखंड के देवगाँव के संगम घाट पर परिक्रमावासियों के लिए भोजन प्रसादी की पर्याप्त व्यवस्था की आवश्यकता है क्योंकि दक्षिण तट पर परिक्रमावासी अधिकतर संगम घाट में रुकते हैं। संगम घाट में प्रतिदिन दक्षिण तट परिक्रमावासी लगभग 50% रात्रि विश्राम करते हैं ।

- रपटा घाट के पास ऑफ़िसर्स मेस से बहने वाला गंदा पानी सीधा नर्मदा में जाके मिल जाता है जिस पर कार्यवाही आवश्यक है ।
- यहाँ स्थित देवगांव संगम घाट आदर्श घाट के रूप में विकसित किया गया है, जिससे यहाँ के अन्य घाटों के विकास हेतु प्रेरणा ली जा सकती है ।

ज़िला सिवनी

- सिवनी जिले का घंसौर रानी अवंती बाई बरगी बाँध के बैक वाटर का विस्तृत क्षेत्र है, जिसमे 39 किनारे हैं ।
- प्राचीन काल में झाल खंड जिस उल्लेख नर्मदा पुराण एवं अन्य धार्मिक वृतान्तो में मिलता है उस क्षेत्र के लगभग 12 घाट यहां स्थित हैं । मंडला जिले की सीमा से प्रारंभ निचली बुधेरा के घाट से पायली तक इनका विस्तार है ।
- कुछ उल्लेखनीय घाट जिनका धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व है - तेकाडी घाट, गौ घाट, निचली घाट (मौनी माता आश्रम), छिन्द्वाहा, एवं पिपरिया ।
- ईको पर्यटन की द्रष्टि से महत्त्वपूर्ण घाट -पायाली, झुर्खी, कंचन धाम, अमझर टोला, सर्रा
- परिक्रमा पथ में कुछ घाट ही सम्मिलित किया जा सकते हैं किन्तु स्थानीय महत्त्व एवं एतिहासिक कथाओं के आधार धार्मिक क्षेत्र जैसे तेकाडी का घाट जहाँ पौराणिक मान्यता है कि भगवान शिव ने यहाँ तप किया था उक्त घाट को आस्था के केंद्र के रूप में विकसित कर सम्पूर्ण क्षेत्र के महत्त्व एवं विकास को गति देने का कार्य किया जा सकता है ।
- वर्तमान में कोई भी घाट विकसित या चिन्हित नहीं है, लगभग सभी घटो में पर्याप्त सुविधाएं नहीं है, इसलिए पर्यटक कम आते हैं ।

ज़िला जबलपुर

- जबलपुर ज़िले में कुल 74 घाट हैं, जो मुख्य रूप से दो विकासखंडों - जबलपुर और शाहपुरा में स्थित हैं। इन घाटों में से 9 स्थानों पर नर्मदा नदी के घाट स्थित नहीं है।
- जुगपुरा घाट एक महत्वपूर्ण स्थल है, जहाँ नर्मदा और हिरण नदी का संगम होता है। यह स्थान धार्मिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से विशेष महत्व रखता है।
- नर्मदा घाटों तक पहुँचने के लिए पर्याप्त मार्गों की कमी है। केवल 20% घाटों तक पक्की सड़कें पहुँचती हैं, जबकि बाकी घाटों तक पहुँचने के लिए कच्चे और अर्धनिर्मित रास्ते हैं।
- कुल घाटों का केवल 10% प्रमुख घाटों जैसे तिलवारा, देवरी पर शौचालय, चेंजिंग रूम और अन्य बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह पर्यटकों के लिए विशेषकर त्योहारों में एक गंभीर समस्या है । जुगपुरा घाट और झासीघाट जैसे प्रमुख घाटों पर प्रदूषण की समस्या गंभीर रूप से देखी जाती है।
- घुघरा, धरती कछार, बगराई घाट जैसे घाटों पर खनन से जुड़ी समस्याएँ हैं। खनन गतिविधियाँ इन घाटों पर पर्यावरणीय असंतुलन और नदी के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं।
- ग्वारीघाट और भेड़ाघाट ऐसे प्रमुख स्थल हैं, जहाँ नर्मदा जयंती महापर्व को धूमधाम से मनाया जाता है। भेड़ाघाट में हर साल नर्मदा महोत्सव आयोजित किया जाता है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर के कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।
- भेड़ाघाट, जो शहर से केवल 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित प्रमुख आकर्षण है, इसके पास स्थित लमहेटा, दलपतपुर आदि घाटों का विस्तार अत्यधिक संभावनाओं से भरा हुआ है। इन्हें न केवल धार्मिक परिक्रमा के उद्देश्य से, बल्कि व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी विकसित किया जा सकता है।
- शव दाह की व्यवस्था मुख्य घाटों पर अच्छी है, लेकिन ग्रामीण घाटों पर इस व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

- बरबटी और कुसली राम घाट ऐतिहासिक महत्व के स्थल माने जाते हैं। इन घाटों के पास कई प्राचीन आश्रम और संस्कृत विद्यालय स्थित हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और शैक्षिक धरोहर को दर्शाते हैं।
- बरगी क्षेत्र में जबलपुर जिले के कुल 19 घाट स्थित हैं, जिनकी स्थिति सामान्य है। हालांकि, कुछ घाट जैसे सालीबाड़ा को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि यहाँ पर्यटकों की निरंतर भीड़ के बावजूद, बुनियादी सुविधाएँ जैसे चेंजिंग रूम, वॉशरूम या पास में आवास की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।
- जबलपुर के स्थान जैसे खामखेड़ा, बिंझा, मगरधा, तुनिया, गुल्ला पार, गोपालपुर, और शाहपुरा विकासखंड के स्थान जैसे, चरगुवा, झुरई, पिपरिया, और मगरमह में नर्मदा नदी का तट स्थित नहीं है।

ज़िला नरसिंहपुर

- जिले में नर्मदा के तट पर लगभग 90 घाट स्थित हैं, जिनमें से बरमान घाट, सतधारा घाट, ब्रह्मकुंड घाट, झांसी घाट, राम घाट, खाम घाट, और बिलथारी घाट जैसे स्थल विशेष रूप से धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। यह घाट नर्मदा परिक्रमा यात्रियों और पंचकोशी यात्रा के लिए विशेष पड़ाव हैं। इनकी महत्ता केवल धार्मिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है; ये स्थल स्थानीय समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों का भी केंद्र हैं।
- नरसिंहपुर जिले में नर्मदा नदी के प्रवाह में विभिन्न नदियों का संगम नर्मदा से होता है, गोटेगांव विकासखंड में सोनार नदी, बाघेश्वर नदी, नरसिंहपुर विकासखंड में हिरन नदी, करेली विकासखंड में शेर नदी, धमनी नदी, चावरपाठा विकासखंड में शंकर नदी, सुखचैन नदी, साईंखेड़ा विकासखंड में शक्कर नदी, कंचना नदी, लोहरा नदी का संगम होता है ।
- नर्मदा घाटों तक पहुँचने के लिए पर्याप्त और सुगम मार्ग नहीं हैं। 60% घाटों तक जाने वाले रास्ते अर्ध-निर्मित हैं, जो बारिश के मौसम में कीचड़युक्त और फिसलन भरे हो जाते हैं। गाँव से घाट तक सीधा संपर्क नहीं होने के कारण लोगों को खेतों और कच्ची पगडंडियों से होकर गुजरना पड़ता है। यह वृद्ध, महिलाएँ, और बच्चों जैसे कमजोर वर्गों के लिए यात्रा को अत्यंत कठिन बना देता है।
- गोटेगांव और नरसिंहपुर ब्लॉक के घाटों पर जल अधिक प्रदूषित है, जिसका मुख्य कारण रसायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, घाटों पर अवैध गतिविधियाँ, और प्रदूषणकारी पदार्थों का निपटान है। इससे जल का उपयोग पीने और स्नान के लिए असुरक्षित हो जाता है।
- घाटों तक पहुँचने का रास्ता अक्सर स्थानीय किसानों के खेतों से होकर गुजरता है। इससे अतिक्रमण, विवाद, और क्षति की संभावना बढ़ जाती है। खेतों के बीच से गुजरने के कारण श्रद्धालुओं और यात्रियों को असुविधा होती है।

ज़िला हरदा

- हरदा जिले में 7 घाट टिमरनी ब्लॉक 26 घाट हरदा ब्लॉक एवं 6 घाट खिरकिया ब्लॉक के अंतर्गत आते हैं।
- नर्मदा के बहाव की दिशा को देखते हुए हंडिया घाट को केंद्रीय बिंदु माना जाता है। यह घाट धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, खासकर नाभि कुंड के रूप में।
- पंचकोशी यात्रा नर्मदा परिक्रमा का एक हिस्सा है, जो नर्मदा के तटीय क्षेत्रों से होकर गुजरती है। यह यात्रा हंडिया से शुरू होकर मालपोन, गौला, मैदा, सिगोन, भीमपुर, ऊँधल, ऊँचन होकर देवास ज़िले के नेमावर होते हुए समाप्त होती है। इन घाटों का धार्मिक महत्व होते हुए भी इनकी स्थिति काफी दयनीय है।
- लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष पंचकोशी यात्रा के दौरान ऊँचान घाट (नयापुरा) एवं जोगा क़िला स्थित घाट पर अस्थायी निर्माण किया जाता है। उक्त यात्रा के संदर्भ में दोनों घाटों पर स्थायी निर्माण की अत्यंत आवश्यकता है।
- **घाटों की मौजूदा समस्याएँ**
  - असुविधाजनक पहुंच मार्ग: अधिकांश घाटों तक पहुँचने के लिए कच्चे और पगडंडी मार्ग हैं, जो बारिश के मौसम में और कठिन हो जाते हैं। इससे न केवल यात्रियों बल्कि ग्रामीणों को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
  - प्रदूषण और कटाव: घाटों के पास की खेती से रसायन और उर्वरक नर्मदा नदी में रिसकर प्रदूषण का कारण बन रहे हैं। अवैध रेत खनन और घाटों पर मानवीय गतिविधियों से कटाव भी गंभीर समस्या है, जिससे घाटों का संरक्षण खतरे में है।
  - बुनियादी सुविधाओं का अभाव: घाटों पर स्नान, शौचालय और पीने के पानी जैसी आवश्यक सुविधाएँ नहीं हैं। यात्रियों को असुविधा होती है, और केवल शवदाह के लिए कुछ व्यवस्थाएँ मौजूद हैं, जो अपर्याप्त हैं।

ज़िला नर्मदापुरम

- नर्मदा नदी के किनारे बसा नर्मदापुरम अपने खूबसूरत घाटों के लिए प्रसिद्ध है। जिसमें सेठानी घाट, बांद्राभान का नर्मदा-तवा नदी संगम, सूरज कुंड, आँवली घाट, बाबरी घाट, भिलाड़िया घाट, साँडिया घाट, पासी घाट, आदि प्रमुख आकर्षण का केंद्र है।
- नर्मदापुरम जिले के पासी घाट (उमरधा, बनखेड़ी) एवं रामघाट (माछा, सोहागपुर) राम वन गमन पथ में आते हैं जहां ऐसी मान्यता है की यहाँ पर भगवान श्रीराम ने रात्रि विश्राम व स्नान किया था, एवं पूजा अर्चना की थी।
- मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, कार्तिक पूर्णिमा, नर्मदा जयंती, नवरात्र पूजन आदि पर्वों पर हजारों की संख्या में तीर्थयात्री, भक्तजन घाटों पर एकत्र होते हैं एवं पूजन करते हैं ।
- अधिकांश घाटों के लिए पहुँच मार्ग कच्चा है जिससे बारिश के मौसम में पर्यटक, तीर्थयात्री एवं ग्रामीणों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है, जैसे भेला घाट, सर्रा किशोर, गडरोली, हथनापुर
- नर्मदापुरम में अनेक संगम स्थल है जिनके संरक्षण एवं परिक्रमावासी पथ को जोड़ने के लिए पुल बनाने की आवश्यकता है, जैसे- सुकरी संगम, पलकमती संगम आदि।
- अधिकांश घाटों के निकट स्थित सामुदायिक शौचालय की स्थिति खराब है अथवा पानी का कनेक्शन न होने के कारण बंद पड़े हुए है।
- माँ नर्मदा में गंजल नदी का संगम गोंडा ग्राम क्षेत्र में नर्मदापुरम एवं हरदा जिले की सीमा पर होता है, यहाँ परिक्रमावासियों की सुविधा हेतु पुल के निर्माण की आवश्यकता है ।
- माँ नर्मदा और तवा नदी का संगम धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, यहाँ कार्तिक पूर्णिमा पर लगने वाले मेले में बैतूल एवं छिंदवाड़ा जिले के कई जनजातीय समुदाय एकत्र होते हैं, यहाँ स्थित घाटों के विशेष रूप से विकसित करने की आवश्यकता है ।
- जिले में स्थित भारकच्छ, बूंदी एवं बांद्राबंध घाट को आदर्श घाट की उपाधि देते हुए इनके विकास के मॉडल को अन्य घाटों के विकास हेतु उपयोग किया जाना चाहिए ।

ज़िला सीहोर

- सर्वेक्षण के आरंभ में सीहोर ज़िले में 55 घाटों के नाम सूची में दिए गए। परंतु सर्वे के दौरान 1 अतिरिक्त घाट चिन्हित किया गया, जिसका नाम बनेटा घाट है, जो माढावन पंचायत विकास खंड बुधनी के अंतर्गत आता है। यह घाट धार्मिक कार्यों के लिए बहुत प्रसिद्ध है, चूकी माढावन घाट की स्थिति एवं पहुंच मार्ग सही नहीं है, तो आसपास के गाँव के लोगों द्वारा बनेटा घाट उपयोग किया जाता है।
- नसरूल्लागंज के अधिकांश मुख्य घाटों पर ही रेत खनन के काम होते है, जिससे घाटों पर अत्याधिक रेत फैली रहती है, जिस कारण घाट को स्वच्छ रख पाना मुश्किल हो जाता है।
- कुछ घाट के समीप गाँव में नाली की व्यवस्था सही ना होने पर, घाट के मार्ग से ही नाली का पानी बहता है, जिस कारण घाट तथा घाट का पहुंच मार्ग क्षतिग्रस्त हो गए है, जैसे की निन्नोर घाट, तिल्लौट घाट।
- कुछ घाटों का पहुंच मार्ग बहुत दुर्गम है, रास्ता कच्चा होने से कीचड़ अत्याधिक हो जाती है, जिससे पैदल जाना भी कठिन हो जाता है, जैसे छिदगावमांछी, पातालखोह, देवगाँव, जर्रापुर, बीसाखेड़ी।
- अधिकांश घाटों पर सार्वजनिक शौचालय नहीं थे और जिन घाटों पर बने हुए थे, वहाँ कोई कारणवश बंद पड़े हुए है, कारण जैसे रखरखाव ना हो पाना और पानी की सुविधा ना होना ।
- कुछ घाटों के समीप असामाजिक तत्वों की उपस्थित से आम जनों को शाम होने के बाद घाट पर जाने में असुविधा होती है जैसे हथनौरा घाट के निकट शराब की दुकान है, जिससे महिलाएं घाट पर नहीं जा पाती, छीपानेर घाट पर अवैध रेत खनन होता है, शाम के समय आम जन घाट पर नहीं जाते है।

ज़िला रायसेन

- नर्मदा नदी के सभी घाट धार्मिक दृष्टिकोण से आस्था के प्रतीक हैं, लेकिन यदि हम ऐतिहासिक, धार्मिक और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण घाटों पर विचार करें, रायसेन जिले में निम्नलिखित 11 घाट अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हैं: नयाखेड़ा, रिछावर, शोकलपुर, पाटई, मंगलौर घाट, शिवालय घाट, बोरास घाट, धरमपुरा, अलीगंज, केतुघान, खुनिया, मोहदकलां मदागन घाट।
- पताई के इंद्रप्रस्थ घाट, बांसखेड़ा घाट, मोहदकलां और मदगन घाट जैसे घाटों पर कंक्रीट के सुंदर घाट बनाए गए हैं। बिसर के घाट पर उज्जैन की शैली में बना एक मंदिर है, जो एक ही परिसर में स्थित है।
- घाटों के पास बुनियादी सुविधाएँ अपर्याप्त हैं। केवल 23% घाटों पर शौचालय की सुविधा है, 20% घाटों पर पीने के पानी की सुविधा है, 10% घाटों पर अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली है, 30% घाटों के पास मुक्तिधाम (दाह संस्कार सुविधा) है, 13% घाटों पर कपड़े बदलने की सुविधा उपलब्ध है।
- लगभग 90% घाटों के पास मिट्टी का कटाव हो रहा है। डुमर के शिवालय घाट और डुमर के मुवार घाट जैसे घाट कटाव के कारण पूरी तरह से बह गए हैं। इस कटाव के कारण नदी आस-पास के गांवों में घुस गई है, जिससे घाट गहरे हो गए हैं और आस-पास के बुनियादी ढांचे को खतरा है। डुमर, मुवार और संखेड़ा जैसे घाटों पर तत्काल पिचिंग कार्य की आवश्यकता है ताकि आगे और कटाव को रोका जा सके और आस-पास के बुनियादी ढांचे और गांवों की सुरक्षा की जा सके।
- जिले में नदी में गिरने वाले बड़े नाले नहीं हैं, फिर भी पिपलेश्वर मंदिर घाट, अंडिया, दिघावन, बांसखेड़ा, सर्रा, सोजनी, चोरस घाट (बड़ा), गोरा मछवाई, भरकछा (हरदोल मंदिर), बराहकलां के घाट जैसे घाट हैं। , सिवनी (बाराहकलां) आदि में नदी में प्रदूषित जल का बहाव देखा जा रहा है।

- शोकलपुर, पिपलेश्वर मंदिर घाट, किवली, तारी घाट जैसे कुछ घाट घाट तक पहुँचने के लिए उचित सड़कों की कमी के कारण दुर्गम हैं। बामनवाड़ा के घाट जैसे कुछ घाटों का धार्मिक महत्व बहुत अधिक है, इसलिए घाटों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए सहायक नदियों पर छोटे पुलों का निर्माण करना अति आवश्यक है।

ज़िला देवास

- कन्नोद ब्लॉक के अधिकांश घाट, जैसे कि कीटी, बनास, और कोठडा, अब अस्तित्व में नहीं हैं क्योंकि ये इंदिरा सागर हाइडल पावर प्लांट के बैकवाटर में डूब चुके हैं। इससे नर्मदा परिक्रमा का पारंपरिक मार्ग भी बदल गया है। परिक्रमा मार्ग अब मुख्य मार्गों और सड़कों के माध्यम से प्रमुख घाटों से होकर ही गुजरता है ।
- नेमावर (देवास), फतेहगढ़ (टिपरास घाट), धाराजी (पीपरी घाट) धार्मिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन की दृष्टि से देवास जिले के सबसे महत्वपूर्ण घाट हैं । धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण एवं आसपास के 100 से भी अधिक गांवों के प्रमुख घाट होने के बावजूद फतेहगढ़ घाट की स्थिति अत्यंत दयनीय है।
- पीपरी से धाराजी 20 किमी दूर है जो अर्धपक्का पहुँच मार्ग है। समस्त क्षेत्र ओंकारेश्वर राष्ट्रीय उद्यान में आता है। धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण होने के बावजूद उचित व्यवस्थाओं की कमी है। धाराजी विशेष धार्मिक महत्त्व रखता है यहाँ स्थित घाट के विकास को गति प्रदान करने की आवश्यकता है।
- पिपलनेरिया, बीजलगांव, चिचली, दैयत, कुण्ड्गांव, गाजनपुर, नीमनपुर, नवाड़ा, बजवाड़ा, नलगांव, मंडलेश्वर, दावठा, राजोर, कणा बुजुर्ग, कोटखेड़ी, सिरालीया रेवातीर, मेलपिपलिया घाटों पर शौचालय एवं स्नान की व्यवस्थाओं में सुधार की आवश्यकता है ।
- डांग, डँठा, भामर, नंदाना, पोखरखुर्द, निमलाय, बनासा, कोथड़ा, किटी, हरलाल बाबा का टप्पर (विकासखंड कन्नोद) समस्त घाट पुनासा डैम (इन्दिरा सागर पावर प्लांट) के डूब क्षेत्र में आते हैं ।
- रातागढ़ खरगोन जिले की सीमा पर कनाड नदी के किनारे स्थित है। नर्मदा नदी के किनारे स्थित नहीं है।

ज़िला खंडवा

- खंडवा में नर्मदा नदी पर स्थित प्रमुख घाट ओंकारेश्वर,धारी घाट, मोर्टाक्का ,सिंगाजी आदि हैं जो नर्मदा परिक्रमा एवं पंचकोसी परिक्रमा के अंतर्गत आते हैं।
- ओंकारेश्वर घाट में स्थित ओंकारेश्वर एवं ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग धार्मिक और पौराणिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।|
- खंडवा के कुछ अन्य घाट ओंकारेश्वर एवं पुनासा डैम के बैकवॉटर में स्थित हैं यहां वे परिक्रमावासी जाते हैं जिन्होंने नर्मदा किनारे के पास ही चलने का संकल्प किया होता है।
- खंडवा में कुछ स्थान जैसे जयंती माता में नर्मदा नदी तो नहीं है पर धार्मिक दृष्टिकोण से ये महत्वपूर्ण हैं जिनका परिक्रमावासी भी दर्शन करते हैं।
- घाटों के पक्के निर्माण एवं सौंदर्यकरण की आवश्यकता है जिससे परिक्रमावासी एवं पर्यटकों को कोई परेशानी न हो।अधिकांश घाट में शौचालय की स्थिति खराब है एवं महिलाओं के लिए अलग से शौचालय के निर्माण की आवश्यकता है।
- घाटों के पक्के निर्माण एवं सौंदर्यकरण की आवश्यकता है जिससे परिक्रमावासी एवं पर्यटकों को कोई परेशानी न हो।अधिकांश घाट में शौचालय की स्थिति खराब है एवं महिलाओं के लिए अलग से शौचालय के निर्माण की आवश्यकता है।

ज़िला खरगोन

- खरगोन जिले के कुल 44 घाटों को इस सर्वेक्षण के अंतर्गत शामिल किया गया है। यह घाट खरगोन के मुख्यतः तीन विकासखंडों में बटें हुए है। लगभग 60 घाटों की सूची में 13 घाट ऐसे थे जो डूब क्षेत्र में आने अथवा अत्यधिक दुर्गम होने के कारण सर्वेक्षण में शामिल नहीं किये गए हैं 0964
- महेश्वर मंडलेश्वर एवं बड़वाह जैसे मुख्य घाटों पर सफाई की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। ग्रामीण घाटों पर नियमित सफाई अभियान की कमी देखी गई है।
- महेश्वर और बड़वाह के घाट स्थानीय प्रशासन और नर्मदा समिति द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं। छोटे घाटों पर प्रशासनिक ध्यान कम होने के कारण रखरखाव की स्थिति खराब है।
- कसरावद विकासखंड के कुल 18 घाटों का सर्वेक्षण किया गया। इसमें पाया गया कि ज़्यादातर घाटों पर परिक्रमा चिन्ह उपलब्ध नहीं है।
- माकडखेड़ा, कसरावद का एक मुख्य घाट है किन्तु इस घाट पर भी सामान्य व्यवस्था जैसे स्वच्छता,पेयजल, शौचालय में कमी पाई गई।
- खलबुजुर्ग घाट बाढ़ में क्षतिग्रस्त होने से पूर्णतः विकसित नहीं हो पाया है।
- कसरावद तहसील में भी ग्रामीण क्षेत्रीय नर्मदा तटों की स्थिति संतोष जनक नहीं है अधिकतर तट कच्ची पगडंडी जैसे क्षेत्रों में है इसके अतिरिक्त भटयन बुजुर्ग, नावड़ाटोड़ी, मैं तटो की स्थिति अच्छी है बाकी ढालखेड़ा, बलगांव, चीचली ,अदलपुरा कटोरा, मालगांव, लेपा,बड़गांव, नगवा आदि क्षेत्रों में पूर्णतः कच्चे तट तथा पगडंडी रास्ते बने हैं
- मलगाव (पुनर्वास), तेल्यव (पुनर्वास), अमलाथा (नर्मदा तट नहीं), बोराड नदी संगम (दुर्गम मार्ग)
- बड़वाह के लगभग 60% घाटों पर पहुँच मार्ग की स्थिति खराब है। घाट ग्रामीण क्षेत्रों में होने से पहुँच मार्ग कच्चा अथवा पगडंडी वाला है।

- रावेरखेड़ी से ककरिया तक परिक्रमा मार्ग खेतों से होते हुए गुज़रता है जिसके कारण परिक्रमा वासियों को असुविधा होती है। रावेरखेड़ी पेशवा बाजी राव की समाधि के लिए प्रसिद्ध है यहाँ के घाटों के विकास से यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी एवं स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ होगा ।
- मरखेड़ा में मरकटी संगम का विशेष धार्मिक महत्त्व है इसके निकट घाटों को विकसित करने की आवश्यकता है ।
- बड़वाह ब्लॉक में मुरल्ला गांव छोड़कर गंगातखेडी, कपास्थल, सेमरला, बेलसर ,रामगढ़ आदि क्षेत्र में तटो की स्थिति बहुत खराब है।
- नागेश्वर मंदिर बड़वाह (नर्मदा तट नहीं), भिलट देव खेढ़ी (नर्मदा तट नहीं), रूप खेड़ी (नर्मदा तट नहीं), रावघाटखेड़ी (नर्मदा तट नहीं), कोठवा (दुर्गम मार्ग), मेहताखेड़ी (नर्मदा तट नहीं), लासांगांव (घाट नहीं), कावड़िया (घाट नहीं)
- महेश्वर विकासखंड के घाटों की स्थिति पिछले वर्ष आई बाढ़ से खराब हो चुकी है। बहुत से घाटों का कचरे का मलबा अभी तक घाट के किनारे मौजूद है।
- महेश्वर के मुख्य घाट जो शहर से केवल 5 किमी के अंदर स्थित है, केवल उनकी स्थिति अच्छी है।
- तहसील बडवाह में बंकवा घाट पर पाए जाने वाले पत्थरों से शिवलिंग का निर्माण किया जाता है जो पूरे प्रदेश में प्रसिद्ध है, इस घाट के महत्व को समझते हुए इसको विकसित करने की आवश्यकता है।
- सियाराम घाट से अनेक श्रद्धालुओं का विशेष जुड़ाव है, इसके विकास को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है ।

जिला धार

- धार जिले के 49 घाटों में से 47 बाढ़ प्रभावित हैं और 14 घाट 5 महीने से अधिक बाढ़ प्रभावित रहते हैं।
- कोटेश्वर घाट, निसरपुर में प्राचीन महादेव का मंदिर है जिसका वर्णन नर्मदा पुराण में भी पाया गया है।
- सभी घाटों पर नदी जल द्वारा ही पेयजल की व्यवस्था पाई गई।
- कोटेश्वर,मेघनाथ,नाव घाट, निमोला गाजीपुर, अछोड़ा छोड़ कर किसी भी घाट पर कोई भी सुरक्षा संकेत या अवरोध नहीं पाया गया।
- सभी प्राकृतिक घाटों पर मिट्टी कटाव, अवैध रेत खनन और गंदगी की समस्या पाई गई।
- कोटेश्वर, मेघनाथ, सेमल्दा, नाव घाट, सुलगांव, शीतलमाता घाट, पीपल्दा, गाजीपुर, धर्मपुरी, अछोदा के अतिरिक्त कहीं भी कपड़े बदलने की व्यवस्था या तो है नहीं या बहुत खराब स्थिति में है।
- धार जिले में उरी, बाघिन, बागेश्वर, भोगली, मान, चिड़िया, खुज, कारम नर्मदा की सहायक नदियां हैं।
- धरमपुरी में श्री बिल्जातेश्वर महादेव मंदिर एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, यहाँ स्थित घाट के विकास को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है ।
- धार जिले के बरदा घाट का विकास जनभागीदारी से किया गया है, जिले के अन्य घाटों के विकास हेतु यहाँ से प्रेरणा ली जा सकती है ।

ज़िला अलीराजपुर

- ग्राम रेणदा - गुजरात सीमा, छकतला, गेंदा, आमला, अकलघरा, कोसरिया, अठ्ठा, सिरखडी, उमरठ, साकड़ी, गुलवट, टेमला, कुकड़िया, बेहड़वा, कुलवट, नामक घाट नर्मदा नदी पर नहीं हैं, सूची में बताए गए सभी स्थान परिक्रमा पथ के विश्राम स्थल हैं। जिसमें से कुछ सांसद निधि द्वारा बनवाए गए हैं और कुछ स्थानीय लोगों के सहयोग से चल रहे हैं।
- सांसद निधि द्वारा निर्मित भवन : बखतगढ़, उमरी, कोसरिया, अठ्ठा, बड़ी सिरखड़ी, उमरठ, टेमला और कुलवट
- कुलवट, बेहड़वा, कुकड़िया और टेमला में सहायक नदी (हथनी और अनखड़) और बैक वाटर के कारण प्राकृतिक घाट बने हुए हैं।
- रेण्दा, गुजरात सीमा में छकतला से 1.5km दूरी पर एक मंदिर है। परिक्रमा वासी यहाँ रुक कर बरसात के समय में स्नान आदि करते हैं। अन्य कोई भी सुविधा नहीं है।
- गेंदा छकतला से 3km दूरी पर यह गाँव है, यहाँ कोई भी परिक्रमावसी नहीं रुकते हैं। छकतला से आते समय गेंदा तिराहे पर किसी भी प्रकार का निर्देशक चिन्ह नहीं है जिससे परिक्रमा पथ के लिए स्थानीय लोगों पर ही निर्भर हैं। पुल निर्माणाधीन होने से कम लोग इस रास्ते से आते हैं।
- कोसरिया छिनकी से 4 km और अकलधरा से 1.5 km है। परिक्रमावासियों के लिए यहाँ सांसद निधि से भवन का निर्माण कराया गया है। परंतु 3 वर्षों बाद भी यह पूर्ण नहीं हुआ है।
- बड़ी सिरखड़ी, परिक्रमावासियों के लिए यहाँ सांसद निधि से भवन का निर्माण कराया गया है। परंतु नव निर्मित भवन की स्थिति अच्छी नहीं है ।
- टेमला से परिक्रमावासी कुकड़िया जाते हैं परंतु बरसात के दिनों में बैकवाटर आने की वजह से नदी पार करनी पड़ती है।
- ग्राम ककराना के कच्छा घाट को धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण इसे विकसित करने की आवश्यकता है ।

ज़िला बड़वानी

- बोराड़ नदी, नंदगांव, विश्वनाथ खेड़ा, चेनपुरा, चिचली, नावडा खेड़ी, नलवाय, किरमोही, केशरपुरा, मोहीपुरा, दतवाड़ा, गोलाटा, छोटा बडदा, आवली, सेंगांव, पिपलूद, खेड़ी, बगूद, कसरावद, एकलरा, राजघाट (कुकरा), भीलखेड़ा, पेन्ड्रा, नंदगांव, पिछोड़ी, कठोरा, सोन्दुल, जांगरवा, अवल्दा, भवती, बिजासन, मोरकट्टा, बोरखेड़ी, एवं कुली डूब प्रभावित/जलमग्न
- लोहारा एवं ब्राह्मण गाँव में स्थित घाट का उपयोग वर्तमान में जन समुदाय द्वारा किया जा रहा है । इन दोनों घाटों पर स्थित मंदिर में प्रतिदिन नर्मदा आरती सम्पन्न की जा रही है । इन घाटों पर नर्मदा परिक्रमा वासियों एवं अन्य तीर्थ यात्रियों के लिए ठहरने एवं भोजन आदि की सीमित व्यवस्था उपलब्ध है । अन्य अधोसंरचना जैसे शौचालय, पेयजल आदि की भी उपयुक्त व्यवस्था उपलब्ध है। घाट पर स्थित शौचालय की साफ -सफाई प्रतिदिन नहीं हो रही है । इन स्थानों पर सरदार सरोवर बांध के कारण घाट का कटाव हो रहा है ।
- सरदार सरोवर बांध के बैक वाटर से जिले में अधिकांश घाटों के पारंपरिक परिक्रमा पथ भी जलमग्न हो चुके है कारणवश नर्मदा परिक्रमा वासियों को मुख्य सड़क से हीं नर्मदा परिक्रमा के लिए गुजरना पड़ रहा है जहां उन्हें वाहन आदि से दुर्घटना का खतरा बना रहता है ।
- पाटी विकासखण्ड में स्थित घोंघसा ,सेमलेट एवं भादल घाट दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है जहां पहुँच मार्ग की अत्यंत आवश्यकता है ।
- सरदार सरोवर बांध के बैक वाटर में जलमग्न हो चुके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व वाले घाट जैसे राजघाट ,कसरवाद ,विश्वनाथखेड़ा ,दतवाड़ा , मोहीपुरा एवं छोटा बडदा आदि घाटों का जीर्णोद्धार करने की अत्यंत आवश्यकता है ।
- राजघाट एवं छोटा बरदा घाट जिले के आदर्श घाट के उद्धरण हैं, जिले के अन्य घाटों के विकास हेतु इन घाटों से प्रेरणा लेनी चाहिए ।

अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान

(मध्यप्रदेश शासन, लोक सेवा प्रबंधन विभाग की पंजीकृत संस्था)

An ISO 9001: 2015 Organisation

कार्यालय : सुशासन भवन, भदभदा चौराहा, टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.) 462003

दूरभाष क्रमांक: +91-755-2777316, 2777308, 2770765,2770695,2770538,2770761,फेक्स: +91-755-2777316

ई-मेल: aiggpa@mp.gov.in, वेबसाइट : www.aiggpa.mp.gov.in